अपना परिवेश

पर्यावरण अध्ययन

कक्षा 3

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

www.rajteachers.com

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क 80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल 2-2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

www.rajteachers.com

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्त्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्त्व है। विद्यालयी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र में है। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, विषयवस्तु, चित्र, विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात कर सके। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए पर्याप्त अवसर मिले एवं विषय उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर, पाठ्यपुस्तक के विकास में सहयोग के लिए उन समस्त संस्थानों, संगठनों, लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रति आभार व्यक्त करता है जिन्होंने पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। इनमें एन.सी.ई.आर.टी., राज्य सरकार, भारतीय जनगणना विभाग, आहड़ संग्रहालय उदयपुर, सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय जयपुर, विभिन्न सरकारी विभागों, संस्थानों तथा समाचार पत्र–पत्रिकाओं एवं वेबसाईट्स का आभार व्यक्त करता है।

हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। उनका नाम पता चलने एवं

www.rajteachers.com

इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल मीणा, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी.एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् जयपुर, राजस्थान सरकार का मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव सतत् संस्थान को प्राप्त होता रहा है। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनीसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ, यूनिसेफ राजस्थान जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनीसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है।

संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है, अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके अमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर

www.rajteachers.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक	विनीता बोहरा, निदेशक, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
मुख्य समन्वयक	नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
समन्वयक	डॉ. अमृता दाधीच, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
सह समन्वयक	प्रमिला श्रीमाली, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
लेखक समूह	श्याम सुंदर भट्ट, उपनिदेशक, सावित्री बा फूले पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान, उदयपुर (संयोजक)
	प्रेरणा नौसालिया, प्रधानाचार्या, रा.बा.उ.मा.वि., गरीब नगर, उदयपुर
	डॉ. अनीसा तलत टीनवाला, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. भूताला, उदयपुर
	धर्मेश जैन, व्याख्याता, डाइट, डूँगरपुर
	प्रमोद चमोली, व्याख्याता, मा.शि. निदेशालय, बीकानेर
	भरत किशोर चौबीसा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. डबोक, उदयपुर
	चन्द्रकांत व्यास, व्याख्याता., रा.उ.मा.वि. रानीदेशीपुरा, बाड़मेर
	निरंजन कुमार पटवारी, प्रधानाध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. सराय, उदयपुर
	मनमोहन पुरोहित, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. फलौदी, जोधपुर
	डॉ. सुरेश चन्द्र जांगिड़, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., बनाड़, जोधपुर
	चिन्मय भट्ट, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. पाल निंबोदा, उदयपुर
अन्य सहयोगी	निर्मला शर्मा, प्रधानाचार्या, मॉडल पब्लिक आ. वि., ढिकली, उदयपुर
	देवीलाल ठाकुर, व्याख्याता रा.उ.मा.वि. मादड़ी (झाड़ोल) उदयपुर
	भगवती लाल चौबीसा, सेवानिवृत स.नि., शि.क.ई., उदयपुर
	गीता सिंह, व्याख्याता, डाइट, उदयपुर
	अंजना जैन, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. अमरपुरा, उदयपुर
	दीप्ति कौशल, अध्यापिका, रा.प्रा.वि. सालेराकला, उदयपुर
आवरण एवं सज्जा	डॉ. जगदीश कुमावत, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
चित्रांकन	अशोक शर्मा, उदयपुर, अचल अरविंद, कोटा
तकनीकी सहयोग	हेमंत आमेटा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर
	निखिलेश ओझा, कनिष्ठ लिपिक, गिरजाशंकर घारू
कम्प्यूटर ग्राफिक्स	अनुभव ग्राफिक, अजमेर

www.rajteachers.com

शिक्षकों के लिए

विद्यार्थी, शिक्षक और समाज, हम सब पर्यावरण के ही घटक हैं अतः पर्यावरण के बारे में जो जानकारी दी जाए वह यथार्थ हो तथा बदलते हुए परिवेश में विद्यार्थी को समायोजित कर सके। इस संपूर्ण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। अतः इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया को जानना शिक्षक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस पुस्तक का निर्माण एन.सी.एफ. 2005 के मार्गदर्शक सिद्धान्त, एन.सी.ई.आर.टी एवं अन्य राज्यों के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन कर किया गया है। इसके अनुसार विद्यार्थी में ज्ञान निर्माण हेतु अनुभवों के विश्लेषण करने, स्वयं करके सीखने, समझने, व्याख्या करने, सूचनाएँ एकत्र कर स्वयं से संवाद स्थापित करने में सक्षम बन सकेगा।

शिक्षक का दायित्व होगा कि वह यह समझे कि विद्यार्थियों को कब, कहाँ और क्या मार्गदर्शन देना है। शिक्षक सुविधादाता/सहयोगकर्ता के रूप में अपनी भूमिका पुख्ता करें ताकि बच्चों को सोचने, समझने, और स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता मिल सके। समाज में जिन मूल्यों को महत्त्व दिया जा रहा है, उन मूल्यों को वे आत्मसात कर अपने व्यवहार में ला सकें।

इस कार्य हेतु पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक "अपना परिवेश" के शिक्षण में शिक्षकों को निम्नांकित बिंदुओं पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि इन्हीं बातों का पुस्तक लेखन में भी ध्यान रखा गया है।

- पुस्तक साधन मात्र है, अतः शिक्षक पर्यावरण अध्ययन हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम को आधार बनाकर कक्षा में गतिविधियों को आयोजित करें। पुस्तक के इतर संदर्भ सामग्री, स्थानीय स्रोत आदि भी शिक्षण में सहयोगार्थ ली जा सकती है जैसे– वातावरण तैयार करने के लिए अन्य गतिविधियाँ, पुस्तकालय, समाचार पत्र, परिवेश के अन्य घटकों जैसे– अभिभावक, पास–पड़ोस, परिवार के सदस्य आदि के अनुभवों को बच्चों के माध्यम से ही संकलित कर विषयवस्तु में ग्राह्य बनाया जा सकता है।
- जेण्डर संवेदनशीलता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। कक्षा में बालक एवं बालिकाओं को गतिविधियों में बराबर के अवसर दिए जाएँ।
- बच्चों के जीवन से जुड़े अनुभवों, संवैधानिक मूल्यों, पर्यावरणीय जागरुकता, संवेदनशीलता आदि को आधार बनाकर पुस्तक का लेखन किया गया है। इस हेतु कक्षा तीन से पाँच के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक विकास हेतु निम्नांकित पर्यावरणीय घटकों को आधार माना है–
    1. हमारा परिवेश एवं संस्कृति
    2. अनमोल जल
    3. हम और हमारा खान–पान
    4. हमारे गौरव
    5. हम सबके घर
    6. हमारे व्यवसाय
    7. हमारे यातायात एवं संचार के साधन
- शिक्षकों से अनुरोध है कि इन पर्यावरणीय घटकों पर आधारित पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करें। इसमें बाल केंद्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (Child Centered Pedagogy) तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रमुखतः ध्यान रखें।

www.rajteachers.com

- उक्त बिंदुओं के आधार पर बालकों के समक्ष विषयवस्तु को आगे बढ़ाने में संभावित गतिविधियों को बच्चों के अनुभवों के आधार पर जोड़ा जाए।
- पुस्तक में पाठों का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया गया है कि बहुकक्षीय एवं बहुस्तरीय शिक्षण में सुविधा रहे। अतः शिक्षकों को तीनों पाठ्यपुस्तकों एवं पाठ्यक्रम को साथ रखकर अपनी शिक्षण योजना बनाने में सुविधा रहेगी। जैसे– यदि कक्षा 3 में पर्यावरणीय घटक हमारा परिवेश एवं संस्कृति से संबंधित सामग्री पहले ली है तो उसी क्रमबद्धता के साथ कक्षा 4 व कक्षा 5 में उसे संवर्धित किया गया है।
- पाठ्यपुस्तक में बच्चों को अवलोकन, खोज, वर्गीकरण, प्रयोग, बातचीत करना, अंतर ढूँढना, लिखना आदि कौशलों के विकास का अवसर प्रदान किया गया है, जिससे बालकों में सृजनात्मकता का कौशल एवं सौंदर्य बोध का विकास हो सके।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 की भावनाओं के अनुरूप बच्चों का शिक्षण के दौरान ही सतत् रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन करते रहें।
- पाठ में जो गतिविधियाँ व प्रयोग दिए हैं, उनका निष्कर्ष बच्चे स्वयं निकालें, ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करें। यदि इस हेतु कक्षा से बाहर ले जाने की आवश्यकता हो तो अवश्य ले जाएँ। भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, अभ्यास कार्य, समूह कार्य का पर्याप्त अवसर दें।
- सामाजिक सरोकार की व्यापक समझ के विकास हेतु परिवार एवं समाज के बारे में बात करते हुए जेण्डर संवेदनशीलता का अवश्य ध्यान रखें।
- शिक्षण के दौरान बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों को देखने के लिए निम्नांकित आकलन सूचकों का प्रयोग किया जाए –
  1. अवलोकन करना।
  2. वर्गीकरण
  3. चर्चा करना।
  4. व्याख्या/विश्लेषण करना।
  5. प्रयोग करना।
  6. प्रश्न करना।
  7. न्याय व समता के प्रति सरोकार
  8. एक–दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा करना।

आप द्वारा बच्चों को सिखाए गए ज्ञान का प्रतिफल बच्चों के खिलखिलाते चेहरों में परिलक्षित होगा। यही आत्मीय संतुष्टि आपको व आपके कार्यों को निरंतर प्रगति की ओर ले जाएगी।

अतः सदैव इसी आशा और विश्वास के साथ बच्चों के सीखने की क्रिया में सुगमकर्ता/मददकर्ता के रुप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहें। इसी सकारात्मक आशा के साथ यह पुस्तक आपको समर्पित है।

www.rajteachers.com

अनुक्रमणिका

आओ, जानें ! पुस्तक में कहाँ क्या ?

पाठ सं.	पर्यावरणीय घटक एवं पाठ का नाम	पृ.सं.
	हमारा परिवेश एवं संस्कृति	
1.	रिश्ते–नाते	1
2.	मित्रता	11
3.	खेल–खेल में	17
4.	स्वच्छता की आदत	22
5.	हरी–हरी पत्तियाँ	30
6.	देखो, जंगल अजब निराला	37
	अनमोल जल	
7.	आओ, पानी को समझें	44
8.	जल ही जीवन का आधार	51
	हम और हमारा खानपान	
9.	भोजन में विविधता	57
10.	भोजन बनाना	65
11.	भोजन संबंधी अच्छी आदतें	72
	हमारे गौरव	
12.	हमारे गौरव–I	79
13.	त्योहार, पर्व और जयंती	86
	हम सबके घर	
14.	आओ, मेरे घर	93
15.	मेरा घर और उनका घर	102
16.	आओ, नक्शा बनाएँ	108
	हमारे व्यवसाय	
17.	रुप बदलती मिट्टी	113
18.	अलग–अलग हैं सबके काम	119
	हमारे यातायात एवं संचार के साधन	
19.	यातायात के साधन	127
20.	संचार के साधन	136

www.rajteachers.com

पाठ 1 रिश्ते–नाते

जमना अपने माता–पिता के साथ शहर में रहती है। उसके माता–पिता शहर में नौकरी करते हैं। दीपावली की छुट्टियों में वह अपने माता–पिता के साथ अपने दादा जी–दादी जी से मिलने गाँव गई। वहाँ उसने देखा कि गाँव के चबूतरे पर बुजुर्ग लोग बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। पिताजी ने सभी का अभिवादन किया और उनकी कुशलक्षेम जानी। घर पहुँचकर माता– पिता सहित जमना ने दादा जी–दादी जी के चरण छुए।

चित्र 1.1 दादाजी–दादीजी से बात करते हुए बच्चे

दादी जी ने जमना को अपने पास खाट पर बैठा लिया और लाड़ करने लगी। जमना ने दादी जी से पूछा कि गाँव में चबूतरे पर इतने सारे लोग क्यों बैठे हुए थे?

वे सभी लोग आपस में दीपावली के त्योहार के संबंध में चर्चा कर रहे हैं, दादी जी ने बताया। दीपावली के दूसरे दिन जमना अपनी माँ के साथ गाँव में सभी लोगों के यहाँ मिलने गई। माँ सभी बड़ों के चरण छूती, बड़े लोग आशीर्वाद देते। पूरे दिन यह चलता रहा। शाम को जमना जब घर लौटी तो दादी जी से कहा कि "दादी जी गाँव में तो बहुत बड़े–बड़े घर हैं।"

www.rajteachers.com

दादी – हाँ बेटा! यहाँ पूरा परिवार साथ रहता है। दादा–दादी, ताऊ–ताई, चाचा–चाची और उनके बच्चे।

जमना – दादी जी, हमारे वहाँ तो ज्यादातर घरों में माता–पिता और बच्चे रहते हैं।

सोचिए और लिखिए

आपके परिवार में कौन–कौन हैं ? उनके साथ आपका क्या संबंध हैं ? नीचे की तालिका में लिखिए

क्रम सं.	नाम	संबंध

पता कीजिए

- कक्षा में किसके घर में सबसे अधिक सदस्य हैं और किसके घर में सबसे कम सदस्य हैं?
- आपमें से कौन–कौन अपने दादा जी–दादी जी के साथ रहते हैं और कौन–कौन दादा जी–दादी जी के साथ नहीं रहते हैं?

www.rajteachers.com

तालिका देखकर बताइए, आप इन रिश्तों को क्या कहते हैं?

मेरे / मेरी	संबंध
पिता जी के पिता जी	
माँ की बहिन	
पिता जी के छोटे भाई	
चाचा जी की पत्नी	
माँ के पिता जी	
पिता जी के बडे भाई	
माँ के भाई	
पिता जी की बहिन	
चाचा जी की लड़की	
ताऊ जी का लड़का	
पिता जी की माता जी	
माँ की माता जी	

जमना अपने माता–पिता के साथ शहर में रहती है। इसी प्रकार कई परिवारों में कुछ सदस्य अलग–अलग कारणों से घर से दूर रहते हैं।

www.rajteachers.com

आपके परिवार के कोई सदस्य यदि परिवार से दूर रहते हैं तो, उनके बारे में जानकारी एकत्र करके नीचे की तालिका में लिखिए

क्रम संख्या	परिवार से दूर रहने वाले सदस्य का नाम	आपसे संबंध	किस शहर/गाँव में रहते हैं?

इसे भी कीजिए

अपने परिवार के सदस्यों के नाम लिख कर कॉपी में शिक्षक की सहायता से वंश–वृक्ष तैयार कीजिए।

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक समस्त विद्यार्थियों को अवसर देवें कि वे बारी–बारी से अपने–अपने पारिवारिक रिश्तेदारों के नाम बताएँ एवं रिश्तों की समझ विकसित करें। बालक अपना परिचय एवं रूचि को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकें ।

www.rajteachers.com

जमना के चाचा–चाची, दादा जी–दादी जी के साथ गाँव में ही रहते हैं। कुछ समय बाद चाची जी माँ बन गई। उन्होंने एक प्यारी सी गुड़िया को जन्म दिया। घर के सब लोग बहुत खुश हुए। चाचा जी भी पिता बनकर बहुत खुश हुए। जमना भी यह जानकर बहुत खुश हुई कि उसके भी एक छोटी बहिन आ गई।

कुछ समय बाद जमना छुट्टियों में नन्हीं गुड़िया से मिलने वापस गाँव गई। वहाँ उसने देखा कि घर के सभी लोग गुड़िया का अच्छे से ध्यान रख रहे हैं।

सोचिए और लिखिए

- आपके परिवार में भी जन्म होने से या शादी–ब्याह होने से कोई नया सदस्य जुड़ा हैं? यदि हाँ, तो उसका आपके साथ क्या संबंध है ?

....

दादी जी उसे रोज नई–नई कहानियाँ सुनाती थी। एक दिन सुबह जमना जल्दी ही उठ गई। रोज की तरह शौच से निवृत्त हो हाथ–मुँह साबुन से धोए। मंजन से दाँत साफ कर किए। दादी जी ने उसे नहला कर बाल बना दिए। फिर जमना दादा जी के साथ खेतों की तरफ घूमने गई। खेतों में लहलहाती फसलें देखना उसे अच्छा लगा। उसे दादा जी के साथ खेत में घूमने पर बड़ा मजा आया। जमना दादा जी–दादी जी के साथ बहुत खुश थी।

सोचिए और लिखिए

- आप सुबह कितने बजे उठते हो?

....

....

www.rajteachers.com

- आपको अपने दैनिक कार्यों में जैसे– मंजन करना, नहाना आदि में कौन–कौन मदद करते हैं?

....

....

- हमारा रोज नहाना क्यों आवश्यक है?

....

....

- स्वस्थ रहने के लिए कौन–कौनसी अच्छी आदतें अपनानी चाहिए ?

....

....

....

....

....

- घर में आपको कौन–कौन कहानी सुनाते हैं?

....

....

www.rajteachers.com

अपने बारे में लिखिए

मेरा परिचय

1.	मेरा नाम	....
2.	मेरे पिता जी का नाम	....
3.	मेरी माँ का नाम	....
4.	मेरे गाँव / शहर का नाम	....
5.	मेरे परिवार में सदस्य संख्या	....
6.	मेरे विद्यालय का नाम	....
7.	मेरी पंसद का खेल	....
8.	मेरी रुचि का कार्य	....
9.	मेरे दोस्त / मेरी सहेली का नाम	....
10.	मैं बड़ा होकर बनना चाहती हूँ / चाहता हूँ	....

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक विद्यार्थियों में समझ विकसित करें कि लोग किन–किन कारणों से परिवार से अलग रहते हैं।

www.rajteachers.com

मेरे परिवार की खास बातें

आपने अब तक अपने परिवार व आपसी संबंधों के बारे में जाना। परिवार के सभी सदस्यों की अलग–अलग विशेषताएँ होती हैं। कोई सदस्य बड़ा तो कोई छोटा, कोई मोटा तो कोई पतला होता है। आपके परिवार में भी अलग–अलग सदस्यों की अलग–अलग विशेषताएँ होगी।

सोचिए और लिखिए

- आपके परिवार में आयु के अनुसार सबसे छोटे व सबसे बड़े सदस्य का नाम बताइए।

  ....

- आपके परिवार में सबसे लंबे बाल किसके हैं?

  ....

- वे अपने लंबे बालों की देखभाल कैसे करते हैं?

  ....

- आपके परिवार में सबसे लंबा कौन है?

  ....

जमना की बहिन अच्छा गाती है। एक दिन विद्यालय की बाल सभा में उसने गाना गाया। गाना सभी को पसंद आया। सभी ने खूब तालियाँ बजाई। कक्षा के अनिल ने अच्छी ढोलक बजाई। दीपक ने कई जानवरों व पक्षियों की आवाज निकाली तो, सभी चकित रह गए।

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

- आपकी अपनी रूचियाँ लिखिए।

....

....

- अपने प्रिय साथी की कौनसी रुचि आपको अच्छी लगती है?

....

- आपने अपने विद्यालय की किन–किन गतिविधियों में भाग लिया है?

....

जमना की माँ अच्छा खाना बनाती है। उसके पिता जी द्वारा बनाई हुई मिठाई बहुत ही स्वादिष्ट होती है। जमना की बुआ राजसमंद में रहती है। वह कपड़ों की सिलाई अच्छी करती है। दूर–दूर से लोग उनके पास कपड़े सिलवाने आते हैं। इससे उनके परिवार को भी आर्थिक मदद मिलती है। सुनीता के पड़ौस में ही अनवर का परिवार रहता है। वह कपड़ों की रंगाई का कार्य करता है।

सोचिए और लिखिए

- आपके परिवार में सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है?

....

- आपके परिवार के सदस्य किस–किस काम को अच्छी तरह से कर सकते हैं?

....

www.rajteachers.com

- आपके पड़ोस में जिन लोगों की मुख्य विशेषताएँ हैं, उनकी कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

....

- आपके परिवार में आर्थिक सहयोग कौन–कौन करता है?

....

हमने सीखा

- गाँव में अधिकांश परिवार संयुक्त रूप से रहते हैं एवं घर का मुखिया घर की बागडोर संभालता है।
- संयुक्त परिवार में रहने के कारण, बच्चे पारिवारिक रिश्तों को जानते हैं। जैसे–दादा–दादी, काका–काकी, ताऊ–ताई, बुआ–फूफा, भैया–दीदी आदि।
- दादा–दादी एवं बड़ों से बच्चों को अच्छे संस्कार सीखने को मिलते हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति की रूचि एवं पसंद अलग–अलग होती हैं।
- व्यक्ति अपनी विशेषताओं के आधार पर कार्य कर घर में आर्थिक सहयोग भी करते हैं।

प्रेम, सहयोग है जहाँ।
सुखी परिवार है वहाँ।।

www.rajteachers.com

पाठ 2 मित्रता

आपने श्रीकृष्ण का नाम सुना है। प्रतिवर्ष आपके विद्यालय में जन्माष्टमी पर्व मनाया जाता है। पुराने समय में आज की तरह विद्यालय नहीं थे। उस समय आश्रम होते थे। सभी बच्चे अपने परिवार से दूर आश्रम में ही रहकर अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करते थे। ऐसे ही गुरु संदीपनी के आश्रम में अन्य बच्चों के साथ श्रीकृष्ण और सुदामा भी पढ़ते थे। दोनों में अच्छी मित्रता थी। वे साथ–साथ मिल–जुलकर खाते, घूमते, पढ़ते व आश्रम के काम करते थे।

अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद दोनों अपने–अपने घर चले गए। श्रीकृष्ण मथुरा के राजकुमार थे जो बाद में द्वारिका जाने के बाद द्वारिकाधीश कहलाए।

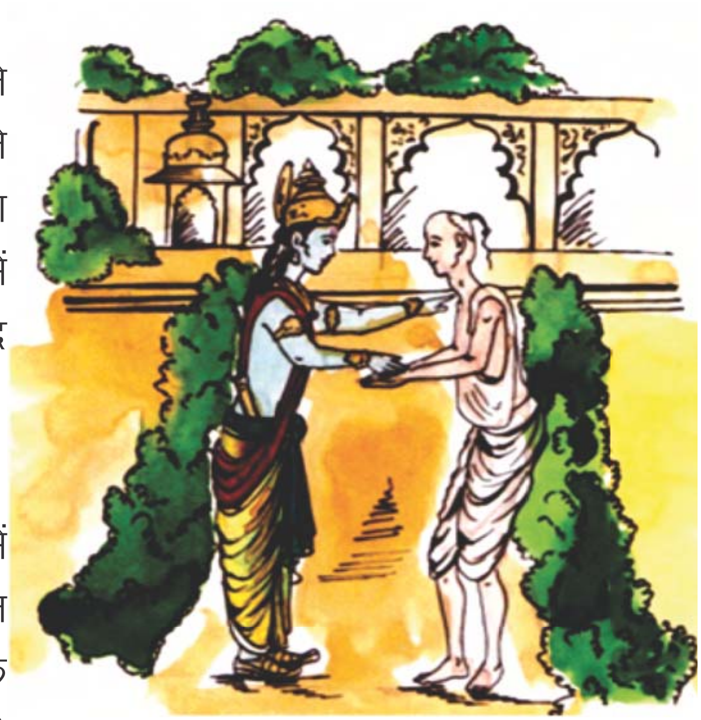
चित्र 2.1 कृष्ण सुदामा मिलाप

सुदामा अपने गाँव में ही साधारण जीवनयापन कर रहे थे। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बड़ी मुश्किल से गुजारा हो पाता था। एक दिन सुदामा की पत्नी ने कहा, ''श्रीकृष्ण आपके बचपन के मित्र हैं। आप उनसे सहायता क्यों नहीं लेते।'' सुदामा कई दिनों तक पत्नी की बात को टालते रहे, पर पत्नी के आग्रह पर वे मान गए।

www.rajteachers.com

कई दिनों की यात्रा के बाद सुदामा द्वारिका पहुँचे तो, वहाँ का वैभव देखकर आश्चर्यचकित हो गए। श्रीकृष्ण के महल पहुँचकर उन्होंने द्वारपाल से कहा– ''मैं कृष्ण का मित्र सुदामा हूँ और उनसे मिलने आया हूँ। मुझे अंदर जाने दो।'' द्वारपाल ने आश्चर्य से सुदामा को देखा। सुदामा के आग्रह पर उसने अंदर जाकर श्रीकृष्ण को बताया।

सुदामा का नाम सुनते ही श्रीकृष्ण दौड़ते हुए द्वार तक आए और सुदामा को गले लगया। सारे लोग मित्रता के इस अद्भुत मिलन को देखकर अभिभूत हो गए। श्रीकृष्ण सुदामा को आदर सहित अपने सिंहासन तक ले गए। श्रीकृष्ण अपने मित्र सुदामा को देख कर ही उनकी मनः स्थिति समझ गए और उनकी सहायता की।

सोचिए और बताइए

- यदि आपका मित्र आप से बहुत दिनों बाद मिले तो आपको कैसा लगेगा ?
- अपने मित्र से क्या–क्या बातें करेंगे?
- यदि आपका कोई मित्र जरूरतमंद हो तो, आप उसकी किस प्रकार सहायता करेंगे?

सोचिए और लिखिए

- हमें मित्र की आवश्यकता क्यों होती है?

  ____

- मित्र हमारे लिए क्या–क्या करते हैं?

  ____

www.rajteachers.com

* कभी आपने अपने किसी मित्र की सहायता की है? यदि हाँ, तो किस तरह ?

____

____

यह भी कीजिए

* अपने पिता जी से उनके घनिष्ठ मित्रों के बारे में बातचीत कीजिए।

कावेरी की बैचेनी

आपने दो मित्रों की कहानी पढ़ी, मित्रता मनुष्यों के बीच में तो होती ही है। पर क्या आपने कभी जानवर और मनुष्यों के बीच मित्रता देखी है ?

आओ, आपको गोपाल की कहानी सुनाते हैं।

गोपाल ने अपने घर पर एक गाय पाल रखी थी। वह गाय को बड़े लाड़– प्यार से रखता था। उसने उसका नाम कावेरी रखा था। जैसे ही वह विद्यालय से घर आता था, गोपाल कावेरी व उसके बछड़े के गले और शरीर को हाथ से सहलाता, फिर उसे हरी–हरी घास खाने को देता था। खाना खिलाते–खिलाते वह उसको दुलार भी करता था।

चित्र 2.2 गोपाल कावेरी के साथ

एक दिन उसे घर आने में देरी हो गई। उसकी गाय रँभाने

www.rajteachers.com

लगी। बैचेन होकर इधर–उधर ताकने लगी। गोपाल की माँ गाय को देख रही थी। अचानक गाय रस्सी तुड़वा कर भाग गई। गोपाल की माँ भी उसके पीछे भागी, पर गाय नहीं मिली। माँ निराश होकर घर आ गई और गोपाल का इंतजार करने लगी।

थोड़ी देर में माँ ने देखा गोपाल और गाय दोनों साथ–साथ आ रहे हैं। उसकी माँ समझ गई कि कावेरी गोपाल के देरी से आने से बैचेन हो गई थी और उसको लेने चली गई थी। अगर हम जानवरों को प्रेम से रखें तो, वे भी हमारे अच्छे मित्र बन सकते हैं।

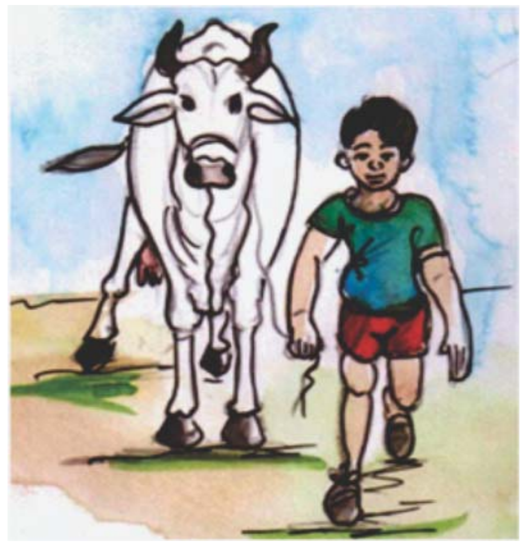

चित्र 2.3 गोपाल कावेरी के साथ घर लौटते हुए

सोचिए और बताइए

- कावेरी क्यों बेचैन हो गई?
- गोपाल की तरह आपकी किसी जानवर से मित्रता हुई है तो, आप कक्षा में अपने अनुभव सुनाइए।

स्वामीभक्ति

महाराणा प्रताप का स्वामीभक्त व प्रिय घोड़ा चेतक था। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने के लिए वह एक पैर से जख्मी होने के बावजूद भी उन्हें बहुत दूर तक लेकर दौड़ा। रास्ते में पड़ने वाले बरसाती नाले को उसने एक छलांग में पार कर लिया। महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद चेतक ने अपने प्राण त्याग दिए।

www.rajteachers.com

चित्र 2.4 चेतक के साथ महाराणा प्रताप

इतिहास में चेतक जैसी स्वामीभक्ति और मित्रता की मिसाल कम ही देखने को नहीं मिलती है। इसी कारण महाराणा प्रताप के साथ–साथ चेतक को हमेशा याद किया जाता है। दिल्ली से उदयपुर चलने वाली एक रेलगाड़ी का नाम भी चेतक एक्सप्रेस रखा गया है।

सोचिए और बताइए

- चेतक कौन था?
- चेतक का महाराणा प्रताप से क्या संबंध था?
- चेतक को हम क्यों याद करते हैं?

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक सच्चे मित्रों के दृष्टांत प्रस्तुत करते हुए मित्रता की समझ विकसित करें। छात्रों से अपने–अपने अच्छे मित्रो के नाम एवं अच्छे कार्यो पर चर्चा करें एवं प्रस्तुति करवावें।

www.rajteachers.com

- युद्ध से क्या–क्या नुकसान होते हैं?

हमने सीखा

- मित्रता पर अमीरी गरीबी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- जानवर भी मित्रता की भावना को समझते हैं।
- हमें जानवरों को भी प्यार से रखना चाहिए।
- चेतक, महाराणा प्रताप का स्वामीभक्त घोड़ा था। जख्मी होने के बावजूद महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद चेतक ने अपने प्राण त्याग दिए।
- हमें विपत्ति के समय अपने मित्रों की सहायता करनी चाहिए।

अवसर मिल जाए तुमको, उसका लाभ उठाओ।
प्यारे बच्चों इस जीवन में, अच्छे मित्र बनाओ।

www.rajteachers.com

पाठ 3 खेल–खेल में

पकड़ो–पकड़ो की आवाज सुनकर राम दौड़कर घर के बाहर आ गया। उसने देखा, रमेश आगे–आगे दौड़ रहा था और उसके पीछे कुछ बच्चे दौड़ रहे थे। राम किसी से बात करना चाह रहा था परंतु कोई भी उसकी बात नहीं सुन रहा था। सभी दौड़े जा रहे थे। थोड़ी देर बाद दौड़ते–दौड़ते रमेश ने दिनेश को छू लिया। वह जोर से चिल्लाया ''आउट–आउट''। सभी एक जगह एकत्र हो गए। अब हम कोई नया खेल खेलें। सभी एक साथ बोल उठे ''कौनसा खेल खेलें'' ? थानाराम बोला मारदड़ी। रितू बोली, कपड़े की गेंद कहाँ है, जो हम मारदड़ी खेलें? भूपेश बोला आज तो हम कबड्डी खेलेंगे। आओ, पहले टीम बनाते हैं।

चित्र 3.1 खेल खेलते बच्चे

चर्चा कीजिए

- आप घर व गली मौहल्लों में कौन–कौनसे खेल खेलते हैं? चर्चा कर सूची बनाइए।

www.rajteachers.com

- इन खेलों में किस–किस सामग्री की आवश्यकता होती है ?
- आप अपने विद्यालय में कौन–कौन से खेल खेलते हैं और उसके लिए विद्यालय में क्या–क्या खेल सामग्री है?
- आपके विद्यालय के दल ने कौन–कौन सी खेल प्रतियोगिता में भाग लिया है?

चित्र 3.2 दो लाइन में खड़े बच्चे

खेल के कालांश में सभी लाइन में खड़े हो गए और गिनती बोली एक, दो .... पंद्रह। नंदू बोला एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह एक तरफ हो जाइए। शेष बच्चे दूसरी तरफ हो जाइए।

सभी बच्चे अपने– अपने पाले में जाकर खड़े हो जाइए। अब अपने दल नायक का चुनाव कीजिए। सभी ने अपने–अपने दल नायक का चुनाव कर लिया। दल नायकों ने अपने–अपने दल सदस्यों की सहायता से दल का नाम आजाद दल व प्रताप दल रखा।

सोचिए और चर्चा कीजिए

- आप कौन–कौन से खेल दल बनाकर खेलते हैं ?
- आप खेलते समय दल कैसे बनाते हैं ?

www.rajteachers.com

- आप दल नायक का चुनाव कैसे करते हैं ?
- आप जब दल बनाते हैं, उसका क्या–क्या नाम रखते हैं?

सभी ने खेल मैदान की लाइनें खींचना शुरू किया। सभी अपने–अपने पाले में जाकर खड़े हो गए। दोनों दल नायकों ने अपने–अपने सदस्यों को कहा, आप सभी तैयार हो जाइए। सभी व्यायाम करने लगे, कोई कूद रहा था, तो कोई हाथों को आगे–पीछे कर रहा था। दोनों दल नायकों ने आपस में मिलकर खेल के कुछ नियम बनाएँ। जैसे– जो कबड्डी करने (रेड देने) जाएगा, उसे मध्य लाइन पार करके आना होगा। इसके अलावा भी कबड्डी खेल के नियम बनाए गए।

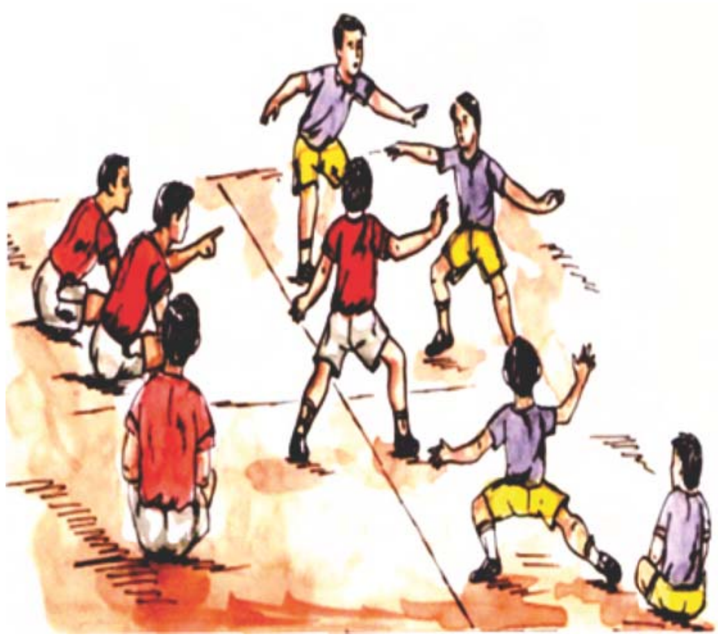
चित्र 3.3 कबड्डी खेलते हुए बच्चे

सोचिए और चर्चा कीजिए

- आप किसी खेल को खेलने से पहले क्या–क्या व्यायाम करते हैं?

खेल शुरू हुआ। प्रताप टीम से धीरज ने कबड्डी– कबड्डी बोलना शुरू किया। अपने हाथों को आगे रखकर बार–बार हिलाता और किसी पर झपट्टा मारता। अचानक उसका हाथ थानाराम को छू गया और वह दौड़कर पुनः अपने पाले में आ गया। सीटी बजी। एक आउट। अब आजाद दल का बाबूलाल कबड्डी– कबड्डी बोलता हुआ गया, बारी–बारी से दोनों

www.rajteachers.com

दलों के खिलाड़ी खेल को खेलते रहे। समय पूरा हुआ, तब दोनों दलों के 5–5 खिलाड़ी आउट हुए थे। खेल बराबरी पर पूरा हुआ, तभी कमलेश ने कहा– हमारी टीम में कुछ खिलाड़ी नये थे, फिर भी हमने बराबर अंक लिए। अतः हम जीते। दल नायकों ने समझाया कि खेल के नियमों के अनुसार मैच बराबर रहा।

सोचिए और बताइए

- आपको क्या लगता है कमलेश सही कह रहा था?
- कमलेश की जगह आप होते तो क्या कहते?

आपने बहुत से खेल देखे होंगे। खेल से पूर्व खिलाड़ी चुस्ती के लिए वार्मअप गतिविधियाँ करते हैं जैसे– योग, हल्का व्यायाम आदि।

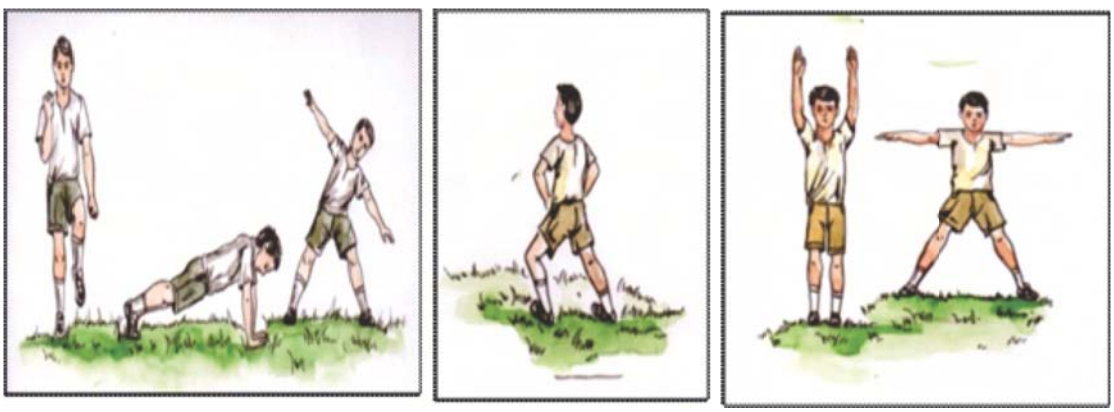

चित्र 3.4 खिलाड़ियों की 'वार्मअप' गतिविधियाँ

आप बहुत से खेल घर में बैठे खेलते हैं। जैसे– साँप–सीढ़ी, कैरम आदि। कुछ खेल गली–मौहल्लों में खेले जाते हैं। जैसे– आँख–मिचोनी, सितोलिया आदि। कुछ खेल, खेल–मैदान में खेले जाते हैं। जैसे– क्रिकेट, बेडमिंटन आदि। खेल सहयोग की भावना का विकास करते हैं एवं मन और मस्तिष्क को स्वस्थ रखते हैं।

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक विद्यार्थियों के दलों का गठन कर कबड्डी का खेल खेलावें।

www.rajteachers.com

सोचिए और बताइए

- आप घर में कौन–कौनसे खेल खेलते हैं ?
- घर के बाहर कौन–कौनसे खेल खेलते हैं ?
- खेल–मैदान में कौन–कौनसे खेल खेलते हैं ?

हमने सीखा

- खेल मनोरंजन एवं व्यायाम के लिए खेले जाते हैं। इनसे मन एवं मस्तिष्क भी स्वस्थ रहते हैं।
- कुछ खेल घरों में खेले जाते हैं, कुछ गली मोहल्लों में,तो कुछ खेल मैदान में।
- खेल खेलने से पहले वार्मअप गतिविधियाँ की जाती हैं। प्रत्येक खेल के अपने नियम होते हैं।
- खेल खिलाड़ियों में सद्भावना और सहयोग की भावना का विकास करते हैं।

कमजोरी को दूर भगाकर, सुंदर स्वस्थ बनाते खेल।
इनसे बुद्धि विकसित होती, कौशल बहुत सिखाते खेल।
रंग, नस्ल का भेद मिटाकर, सबको गले लगाते खेल।।

www.rajteachers.com

पाठ 4

स्वच्छता की आदत

रोज नहाना लगता अच्छा,
सदा रहेगा स्वच्छ वो बच्चा।
खुले में शौच कभी न जाओ,
हैजा, उल्टी, दस्त भगाओ।
रानी बिटिया सीखे ये बातें,
नाखून दाँत से कभी न काटें।
ढका हुआ खाना तुम खाओ,
बीमारी को दूर भगाओ।

गुरमीत प्रतिदिन सुबह समय पर उठता है। सबसे पहले वह शौच करने जाता है। शौच के बाद वह साबुन से अच्छी तरह से हाथ धोता है। उसके बाद वह अपने दाँतों को साफ करने के लिए मंजन करता है।

चित्र 4.1 गुरमीत सुबह उठते हुए

सोचिए और बताइए

- आप सुबह उठते ही क्या करते हैं?
- आप शौच करने कहाँ जाते हैं?

www.rajteachers.com

- शौच करने के बाद साबुन से हाथ धोना क्यों जरूरी है?
- आप दाँत किससे साफ करते हैं?
- आप अपने दाँतों की सफाई कैसे करते हैं ?

चित्र 4.2 गुरमीत सुबह मंजन करते हुए

चर्चा कीजिए

- दाँतों की सफाई क्यों आवश्यक है?

सुबह उठते ही शौच जाना चाहिए। जिससे हमारे शरीर की गंदगी बाहर निकल जाती है। उसके पश्चात् साबुन से हाथ धोने से हाथ पर लगी गंदगी दूर हो जाती है। दाँतों की सफाई नीम के दातुन या ब्रश से करनी चाहिए। रात को सोने से पहले भी हमें ब्रश करना चाहिए।

चित्र 4.3 गुरमीत हाथ धोते हुए

चित्र 4.4 गुरमीत नहाते हुए

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक दाँतों के खराब होने तथा उन्हें साफ करने के तरीकों पर चर्चा करें तथा बच्चों में प्रतिदिन सुबह उठते ही व रात को सोने से पहले दाँत साफ करने की आदत के लिए प्रेरित करें। शिक्षक छात्रों को हाथ धोने के चरणों की जानकारी देवें।

www.rajteachers.com

गुरमीत रोजाना स्नान करता है व ध्यान रखता है कि शरीर के सभी अंग साफ हो जाए। वह बगल, गर्दन,कान के पीछे, जाँघों आदि को साफ करता है। वह स्नान के बाद शरीर को तोलिये या गमछे से पोंछता है, फिर विद्यालय गणवेश पहन कर, तेल लगाकर बालों में कंघी करता है और तैयार होकर विद्यालय जाता है।

चित्र 4.5 गुरमीत विद्यालय जाते हुए

उसके साफ–सुथरे रहने के कारण वह लगातार दो वर्ष से विद्यालय में स्वच्छता पुरस्कार जीत रहा है।

सोचिए और बताइए

- शौच के बाद साबुन से हाथ धोना क्यों आवश्यक है ?
- हमें साफ–सुथरे कपड़े क्यों पहनने चाहिए ?

गुरमीत के पिताजी हर रविवार को उसके हाथ व पैर के नाखून काटते हैं, सिर पर तेल की मालिश करते हैं। उसे तैयार कर गुरुद्वारे ले जाते हैं।

सोचिए और बताइए

- आपके नाखून कौन काटता है ?
- आप अपने नाखून कितने समय बाद कटवाते हो ?

शिक्षक–निर्देश :– शिक्षक नाखून में लगी गंदगी को भोजन के साथ शरीर में जाने से होने वाली हानि पर चर्चा करें एवं नाखूनों की जाँच कर उसे साफ करने व करवाने के लिए प्रेरित करें।

www.rajteachers.com

चर्चा कीजिए

- समय–समय पर नाखून काटना क्यों जरूरी है ?
- नाखून नहीं काटने पर हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

नहाने से हमारे शरीर की सफाई हो जाती है। हमें सप्ताह में एक बार नाखून अवश्य काटने चाहिए, जिससे नाखूनों में फँसी गंदगी खाने के साथ शरीर में न जाए।

घर की सफाई

स्वस्थ रहने के लिए शरीर की सफाई के साथ–साथ आस–पास का परिवेश भी स्वच्छ होना चाहिए। हम अधिकतर समय अपने घर व विद्यालय में रहते हैं। अतः हमें अपना घर, पड़ोस व विद्यालय को साफ रखने चाहिए। घर की सफाई के साथ–साथ हमें सार्वजनिक स्थानों जैसे– विद्यालय, अस्पताल, बस–स्टैण्ड, रेलवे–स्टेशन आदि जगहों पर भी सफाई रखनी चाहिए व कचरे को सदैव कूड़ेदान में ही डालना चाहिए।

चित्र 4.6 सार्वजनिक स्थान पर सफाई करते हुए

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

- आपके घर में रोजाना झाड़ू कौन लगाता है ?

  ____

- किस त्योहार पर आपके पूरे घर की सफाई होती है ?

  ____

- आपका घर साफ रहे, इसके लिए आप घर में क्या मदद करते हैं ?

  ____

- आपके घर का कूड़ा–कचरा कहाँ फेंका जाता है?

  ____

हमें अपने घर का कूड़ा–कचरा घर के बाहर ग्राम पंचायत, नगर पालिका या नगर परिषद द्वारा तय किए गए स्थान पर ही डालना चाहिए। कचरा इधर–उधर फेंकने से गंदगी होती है व बीमारियाँ फैलती हैं।

घर की सजावट

हम घर में उत्सव, पर्व, त्योहार और शादी–ब्याह होने पर घर की साफ–सफाई करने के साथ–साथ सजावट भी करते हैं।

www.rajteachers.com

नीचे के चित्र को देखिए। इसमें घर को किस–किस प्रकार से सजाया गया है?

चित्र 4.7 घर की सजावट

सोचिए और बताइए

- आपके घर की सजावट किस प्रकार की जाती है?
- घर की सजावट में आप किस प्रकार सहयोग करते हैं?
- आप घर की सजावट कब–कब करते हैं?
- आपको अपनी कक्षा की सजावट करनी हो तो कैसे करेगें ? कक्षा में चर्चा कीजिए।

शिक्षक निर्देश :– विद्‌यालय में कक्षा सजावट की प्रतियोगिता रख कर बच्चों में सजावट की समझ बढ़ाई जा सकती है। त्योहारों पर हम घरों को मांडने, रंगोली, फूल, पत्तियों व लाइटों से सजावट करते हैं।

www.rajteachers.com

यह भी कीजिए

नीचे घर का रेखाचित्र दिया है। आप अपनी रुचि से इसमें विभिन्न भागों की सजावट कीजिए।

चित्र 4.8 घर का रेखा चित्र

गाँवों में सफाई, जल, बिजली, सड़कें, सिंचाई आदि की व्यवस्था ग्राम पंचायत करती है। ग्राम पंचायत का मुखिया सरपंच होता है। इसके सदस्य वार्ड पंच होते हैं। सरपंच तथा वार्ड पंच का चुनाव जनता करती है। इसी प्रकार शहरों में नगर पालिका, बड़े शहरों में नगर परिषद व उससे बड़े शहरों में नगर निगम होते हैं। इन्हें शहरी निकाय कहते हैं। उनके प्रतिनिधियों का चुनाव जनता करती है जिन्हें पार्षद कहते हैं। सरकार अलग–अलग योजनाओं के लिए उन्हें धन देती है। कुछ धन ये संस्थाएँ अपने स्तर पर भी जुटाती है। इनसे हमारे गाँव व शहरों का विकास होता है।

पता कीजिए और बताइए

- आपके मौहल्ले के वार्ड पंच / पार्षद का नाम बताइए।

www.rajteachers.com

- आपके गाँव/शहर में इन संस्थाओं ने क्या–क्या कार्य करवाए हैं?
- आपके विद्यालय का भवन किसने बनवाया है?
- आप अपने गाँव या शहर में क्या–क्या विकास चाहते हैं?

हमने सीखा

- शरीर के सभी अंगों आँख, नाक, कान, दाँत, बाल, हाथ आदि की नियमित सफाई आवश्यक है।
- स्वस्थ शरीर अच्छी आदतों पर निर्भर करता है।
- प्रातः उठकर दाँतों को साफ करना, खाने से पहले हाथ धोना, शौच के बाद हाथ धोना, नियमित स्नान करना आदि अच्छी आदतें होती हैं।
- शरीर की सफाई के साथ–साथ घर, विद्यालय एवं सार्वजनिक स्थानों को भी स्वच्छ रखना चाहिए।
- हमें सदैव कचरा कूड़ेदान में डालना चाहिए।
- त्योहारों पर मांडने, रंगोली, फूल, पत्तियों व बिजली के छोटे बल्ब आदि से सजावट की जाती है।
- जनप्रतिनिधि विभिन्न योजनाओं द्वारा हमारे क्षेत्र का विकास करते हैं।

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।'' इसकी समझ छात्रों में विकसित करें कि वे अपने परिवेश में सफाई रखें।

गंदगी हटाओ, पर्यावरण बचाओ।

www.rajteachers.com

पाठ 5 हरी–हरी पत्तियाँ

आओ हम सब मिलकर पेड़ लगाएँ।
हरियाली सब ओर फैलाएँ।।
पेड़ हरा सोना कहलाते।
वायु को ये स्वच्छ बनाते।।
एक–एक सब पेड़ लगाओ।
मीठे–मीठे फल भी खाओ।।

- आपको कोई पेड़–पौधों से संबंधित कविता/लोकगीत याद हो तो कक्षा में सुनाइए।
- आपके आस–पास बहुत से पेड़–पौधे होंगे, उनके नाम कक्षा में बताइए।

माही अपने ताऊजी के साथ खेत पर गई। उसने देखा कि सरसों की फसल लहलहा रही थी। उसे पीले–पीले फूलों से भरी हुई धरती अत्यंत खूबसूरत लग रही थी। वे खेत के किनारे–किनारे चल रहे थे, तब उन्हें बहुत से पेड़–पौधे उगे हुए दिखाई दिए।

चित्र 5.1 माही अपने ताऊजी के साथ खेत पर

माही – ताऊ जी, यह छोटे–बड़े पेड़–पौधे किसने लगाए हैं?

ताऊ जी – कुछ पेड़ तुम्हारे दादा जी ने लगाए थे और कुछ स्वतः ही उग गए हैं।

www.rajteachers.com

वे धीरे–धीरे आगे बढ़ते हुए कुएँ के पास पहुँचे तो ताऊ जी ने बताया कि यह बरगद का पेड़ मेरे दादा जी ने लगाया था। यह पेड़ धीरे– धीरे बड़ा होता गया। इसकी शाखाओं से जड़ें निकलकर भूमि की ओर बढ़ने लगी और इस बड़े पेड़ को सहारा देने लगी है। ताऊ जी ने कहा मैं जब छोटा था, तब इन जड़ों को पकड़कर झूलता था।

चित्र 5.2 माही बरगद की जड़ों पर झूलते हुए

जिनका तना लंबा व मजबूत होता है एवं आयु अधिक होती है, उन्हें पेड़ कहा जाता है तथा जिनका तना कोमल एवं छोटा होता है, उन्हें पौधे कहा जाता है।

माही – ताऊ जी, आपने कौन–कौनसे पेड़ लगाए?

ताऊ जी – मैंने आम, नीम व पीपल के पेड़ लगाए हैं।

माही – मैं भी बरगद के पेड़ पर झूलूँ?

ताऊ जी – हाँ–हाँ, झूल लो।

पता कीजिए और बताइए

- आपके आस–पास कौन–कौनसे पेड़ हैं?

www.rajteachers.com

- आपके आस–पास सबसे पुराना पेड़ कौनसा है?
- इस पुराने पेड़ को किसने लगाया?

माही – ये फूलों के पेड़ लगे हुए हैं, इनको किसने लगाया?

ताऊजी – ये फूलों के पौधे हैं। इनको भी मैंने लगाया है। पेड़ लंबे और पौधे छोटे होते हैं ।

पता कीजिए और बताइए

- आपके घर या आस–पास फूल वाले कौन–कौनसे पौधे लगे हैं? उन पर लगने वाले फूलों के रंग बताइए।
- आपके आस–पास सबसे ऊँचा पेड़ कौनसा है?
- आपके आस–पास सबसे छोटा पेड़ कौनसा है?
- आपको सबसे अच्छा पौधा कौनसा लगता है?

माही – इन सब पेडों की पत्तियाँ तो हरी है। नीम की पत्तियों को तो देखो, ये छोटी हैं तो पीपल की पत्ती बड़ी है।

ताऊजी– पत्तियाँ कई तरह की होती हैं। आकार व किनारे भी अलग–अलग होते हैं। किसी का किनारा सीधा, किसी का कटाफटा और किसी का तिकोना।

माही – ताऊ जी, क्या पत्तियों का स्वाद एक जैसा होता है?

ताऊजी –नहीं, पत्तियों का स्वाद भी अलग–अलग होता है?

माही – ताऊ जी, तुलसी की पत्ती का स्वाद तीखा और नीम की पत्ती का स्वाद कड़वा है।

ताऊजी– अलग–अलग पेड़ की पत्तियों का स्वाद व गंध अलग–अलग होती है लेकिन हमें सभी पत्तियों को बड़ों से बिना पूछें चखना नहीं चाहिए।

www.rajteachers.com

माही – ताऊ जी, पुदीना और धनिया में तो बहुत अच्छी खुशबू आती है।

ताऊजी– हम अनेक पत्तियों और फलों को खाते हैं।

यह भी कीजिए

- आप विभिन्न प्रकार की पत्तियों का संग्रह कर, अपनी कॉपी में छोटे से बड़े क्रम में चिपकाइए।
- नीचे दी गई पत्तियों व उनके फलों का मिलान कीजिए
(इमली, नींबू, पपीता, केला, अनार)

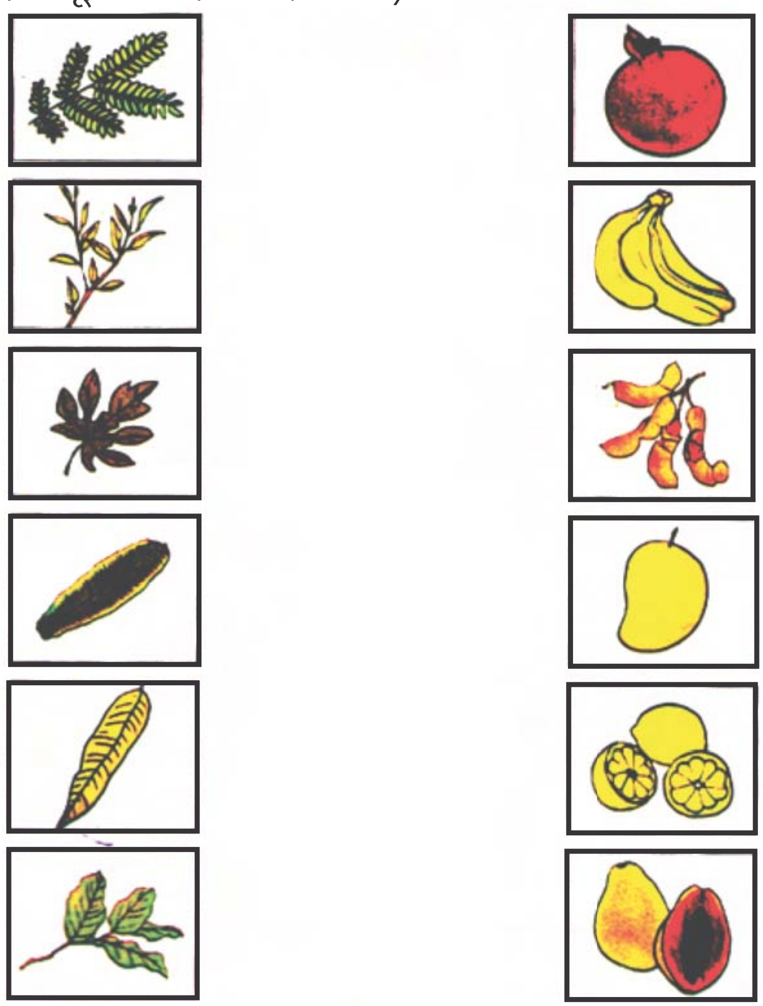

चित्र 5.3 विभिन्न पत्तियाँ व फल

www.rajteachers.com

पता कीजिए और लिखिए

- किस पौधे की खुशबू आपको अच्छी लगती है?

  ....

- कौन–कौन सी पत्तियाँ खाने के काम में आती हैं?

  ....

- कौन सी पत्ती का स्वाद आपको सबसे अधिक पसंद है?

  ....

- आपके घर में किन–किन वस्तुओं पर फूल–पत्तियों के चित्र बने हैं?

  ....

- आपके घर में शुभ एवं मांगलिक कार्यों में किन–किन फूल–पत्तियों से सजावट की जाती हैं?

  ....

माही – ताऊ जी, हमें पेड़–पौधों से तो बहुत कुछ मिलता है।

ताऊजी – हाँ, हमारा व पशु–पक्षियों का भोजन इन पेड़ों से ही तो मिलता है। पेड़ तो कई जन्तुओं एवं पक्षियों के आवास भी होते हैं।

माही – ताऊ जी, हमारे घर में दरवाजे, खिड़की, टेबल, कुर्सी आदि भी तो पेड़ों की लकड़ी से बनते हैं।

ताऊजी – हाँ बेटी, सही कह रही हो तुम। रसोई में जाकर देखो कौन–कौन सी वस्तुएँ हमें पेड़–पौधों से मिली है?

www.rajteachers.com

पता कीजिए

- आपकी रसोई में कौन–कौनसी चीजें पेड़ों से मिली है?
- आप ईंधन के रूप में कौन–कौनसी सामग्री काम में लेते हैं?
- आपके घर में कौन–कौनसी वस्तुएँ पेड़ों से मिली हैं?

माही – ताऊ जी, हमारे खेत पर कुछ पेड़ों की पत्तियाँ पीली क्यों हो गई है?

बसंत ऋतु से पहले पेड़ों की पत्तियाँ पीली होकर गिर जाती है। इस तरह पत्तियों का गिरना पतझड़ कहा जाता है। पतझड़ के पश्चात पेड़ों पर हरी–हरी कोमल पत्तियाँ उग कर पेड़ों को सुंदर बनाती है।

ताऊजी – अब पतझड़ का मौसम आने वाला है। पत्तियाँ धीरे–धीरे पीली होकर गिर जाएगी और पेड़ पर नयी हरी–हरी पत्तियाँ आने लगेगी।

माही – तब तो पेड़ अच्छा नहीं लगेगा।

ताऊजी – कुछ समय बाद हरी पत्तियाँ बड़ी हो जाएगी और पूरा पेड़ हरा–हरा हो जाएगा और सुंदर लगेगा।

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाकर पेड़–पौधों को अंतर समझाएँ एवं इनके लाभ पर चर्चा करें।

www.rajteachers.com

हमने सीखा

- जिनका तना लंबा व मजबूत होता है एवं आयु अधिक होती है, उन्हें पेड़ कहा जाता है तथा जिनका तना कोमल एवं छोटा होता है, उन्हें पौधे कहा जाता है।
- विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों की पत्तियाँ भी अलग–अलग आकार, रंग,रुप एवं खुशबू वाली होती हैं।
- कुछ पेड़ों की पत्तियों, फूलों एवं जड़ों से दवाईयाँ बनाई जाती हैं। पेड़ों की लकड़ी का उपयोग दैनिक जीवन की उपयोगी चीजें बनाने में किया जाता हैं।
- पत्तियों का पीला होकर गिर जाना, पतझड़ कहलाता है।
- अनेक पत्तियों जैसे – पालक, पुदीना, धनिया, मेथी, बथुआ आदि का उपयोग सब्जी बनाने में किया जाता है।

वृक्ष लगाओ, जीवन बचाओ।

www.rajteachers.com

पाठ 6 देखो, जंगल अजब निराला

देखो जंगल अजब निराला।
पर्यावरण का यह रखवाला ।।

हाथी, चीता, शेर, बघेरा।
काग, कपोत, बटेर का फेरा
अलग–अलग है इनकी बोली
न्यारी–न्यारी है इनकी टोली।।

भालू, सियार, हरिण व घोड़ा
चिड़िया, मैना, शुक, कठफोड़ा।।

अलग–अलग है इनके रंग
अजब अनूठे इनके ढ़ंग
साँप, छछुंदर, मगर, छिपकली
मच्छर, चींटी, मक्खी, तितली

अलग–अलग है इनकी चाल
जंगल में करते कमाल–धमाल।।

देखो जंगल अजब निराला।
पर्यावरण का यह रखवाला ।।

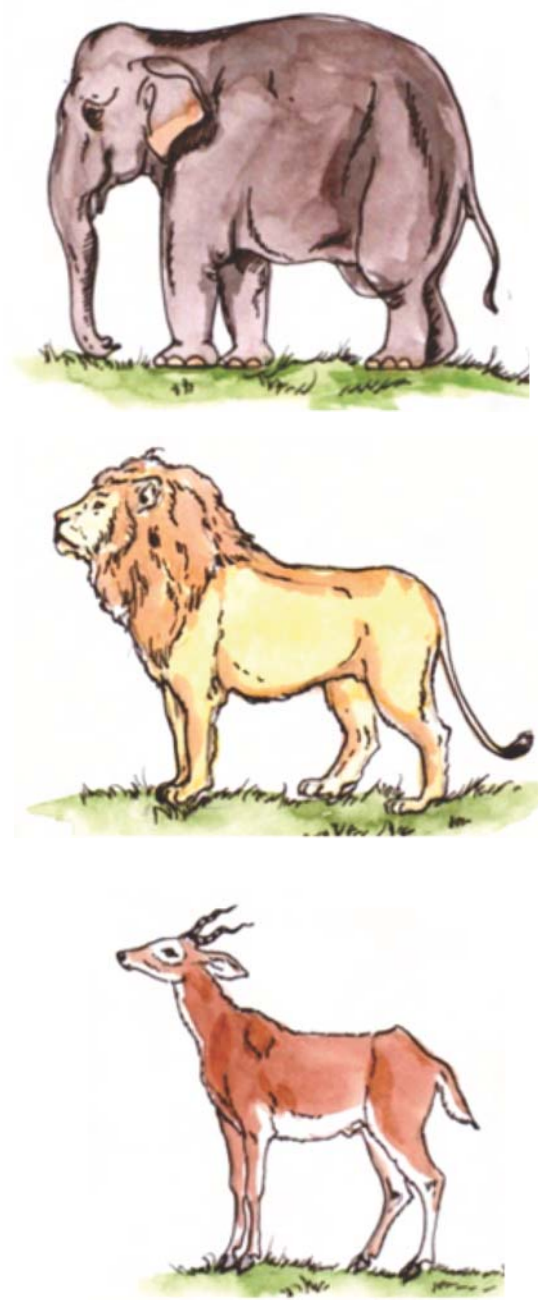

चित्र 6.1 (अ) जंगल के जीव–जन्तु

www.rajteachers.com

जानिए

शुक–तोता

काग–कौआ

कपोत–कबूतर

चित्र 6.1 (ब) जंगल के जीव–जन्तु

सोचिए और लिखिए

इस कविता में कौन–कौनसे जीव–जंतु आए हैं? इनके नाम लिखिए।

____

____

अंतर पहचानिए

- हाथी, चीता, शेर एवं बघेरा इनमें से आकार के आधार पर कौन अलग है ?
- भालू, सियार, हिरण व घोड़ा इनमें से कौन पालतू हैं?
- चिड़िया, मैना, शुक, कठफोड़वा में से कौन घोंसला नहीं बनाते हैं?
- साँप, छछुंदर, मगरमच्छ एवं छिपकली इनमें से कौन रेंगने वाला नहीं है?

www.rajteachers.com

- मच्छर, कनखजूरा, मक्खी एवं तितली इनमें से कीट पंतगों के आधार पर कौन अलग है?

जानवरों का संसार बहुत बड़ा है। इनमें कई विशाल तो कई छोटे जानवर हैं जो जल, थल व नभ में पाए जाते हैं। प्रत्येक के रुप, रंग व आकार अलग–अलग होते हैं।

तीन–तीन जीव–जंतुओं के नाम लिखिए जो

- रात में देख सकते हैं। ——— ——— ———
- जो हमारे घरों में हमारे साथ रहते हैं। ——— ——— ———
- जिनसे हमें दूध मिलता है। ——— ——— ———
- जो घास खाते हैं। ——— ——— ———
- जो माँस खाते हैं। ——— ——— ———
- जो कीड़े–मकोड़े व कीट पंतगे खाते हैं। ——— ——— ———
- जो अनाज के दाने खाते हैं। ——— ——— ———
- जिन्हें हम पालते हैं। ——— ——— ———
- जिनके दाँत नहीं होते हैं ? ——— ——— ———

जीव–जंतुओं का भोजन

वे जीव–जंतु जो केवल पेड़–पौधों से प्राप्त सामग्री को भोजन के रूप में काम में लेते हैं, उन्हें शाकाहारी कहते हैं। आपने बिल्ली को चूहे या पक्षियों का शिकार करते भी देखा होगा। वह इनका माँस खाती है। जंगली जंतु जैसे– शेर, चीता, गीदड़ आदि शाकाहारी हिरण, खरगोश आदि का शिकार

www.rajteachers.com

करते हैं। वे इन्हें मार कर इनका माँस खाते हैं। माँस खाने वाले जंतु माँसाहारी कहलाते हैं। कुछ जीव–जंतु पेड़–पौधों से प्राप्त सामग्री के साथ–साथ माँस भी खाते हैं, इन्हें सर्वाहारी जंतु कहते हैं जैसे – कौआ, भालू आदि।

चित्र 6.2 विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु भोजन करते हुए

पता कीजिए और लिखिए

नीचे दी गई तालिका में किन्ही पाँच जीव–जंतुओं के नाम व उनके द्‌वारा किए जाने वाले भोजन के बारे में लिखिए।

क्र.सं.	जीव–जन्तु का नाम	इनके द्वारा खाया जाने वाला भोजन
1	....	....
2	....	....
3	....	....
4	....	....
5	....	....

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

- जमीन पर पाए जाने वाले जानवर के नाम

  ____

  ____

  ____

- पानी में पाए जाने वाले जानवर के नाम

  ____

  ____

  ____

- जमीन और पानी दोनों में पाए जाने वाले जानवर के नाम

  ____

  ____

- **जलीय आवास** :– जहाँ आस–पास संपूर्ण रूप से जल हो उसे जलीय आवास कहते हैं। इस आवास में रहने वाले पौधे और जंतु जल में ही अपना जीवन–यापन करते हैं। जैसे – मछली और कमल।
- **स्थलीय आवास** :– हम जिस आवास में रहते हैं वह स्थलीय आवास है। इस आवास में वायु, प्रकाश इत्यादि पर्याप्त मात्रा में होता है। ये आवास वातावरण के आधार पर अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जहाँ बर्फ हो व सर्दी अधिक रहे, उसे शीत आवास कहते हैं। इसी तरह जहाँ जल की कमी हो, उसे सूखा या शुष्क आवास कहते हैं। इसी प्रकार जहाँ वातावरण में पर्याप्त जल व अनुकूल ताप हो, उसे सम आवास कह सकते हैं।

www.rajteachers.com

पता कीजिए और लिखिए

आवास .... आवास .... आवास ....

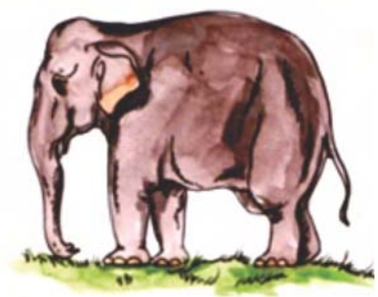

आवास .... आवास .... आवास ....

चित्र 6.3 जीव–जंतुओं के आवास

- अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले जीव जंतुओं के आवास व भोजन की सूची बनाइए।

शिक्षक निर्देश – शिक्षक विद्यार्थियों को स्थानीय क्षेत्र में पाए जाने वाले जीव जंतुओं की जानकारी दें।

www.rajteachers.com

हमने सीखा

- प्रत्येक जीव–जन्तु रूप रंग व आकार के आधार भिन्न–भिन्न होते हैं।
- जो जीव–जंतु केवल पेड़–पौधों से प्राप्त सामग्री को भोजन के रूप में लेते हैं, वे शाकाहारी जंतु कहलाते है। जैसे– गाय, भैंस, बकरी, खरगोश आदि।
- जो जीव–जंतु केवल माँस का ही भोजन करते हैं, वे माँसाहारी जंतु कहलाते हैं। जैसे– शेर, चीता, भेड़िया आदि।
- जो जीव–जंतु पेड़–पौधें एवं माँस दोनों प्रकार का भोजन करते हैं। वे सर्वाहारी कहलाते हैं। जैसे–मनुष्य, कौआ, भालू आदि।
- जीव–जंतु जल, थल व नभ में पाए जाते हैं।
- आवास के आधार पर जीव–जंतु अनुकूलित होते हैं।

जंगल से ही हरियाली है,
हर घर आँगन खुशहाली है।

www.rajteachers.com

पाठ 7 आओ, पानी को समझें

रजत विद्यालय से घर आ रहा था, कि बरसात शुरू हो गई। उसने बरसात में भीगने से बचने के लिए एक पेड़ का सहारा लिया लेकिन बरसात तेज थी उसी समय उसके साथी भीगते–भीगते आ पहुँचे। वो भी अपने को रोक नहीं पाया। सभी एक साथ बरसात में नहाने लगे। सभी पानी में उछल–कूद मचा रहे थे और गाना गा रहे थे।

इन्दर राजा पानी दे।
पानी दे गुड़ धानी दे।।

चित्र 7.1 बरसात में उछल कूद करते बच्चे

www.rajteachers.com

दिए गए चित्र को बिंदुओं से मिलाइए और रंग भरिए

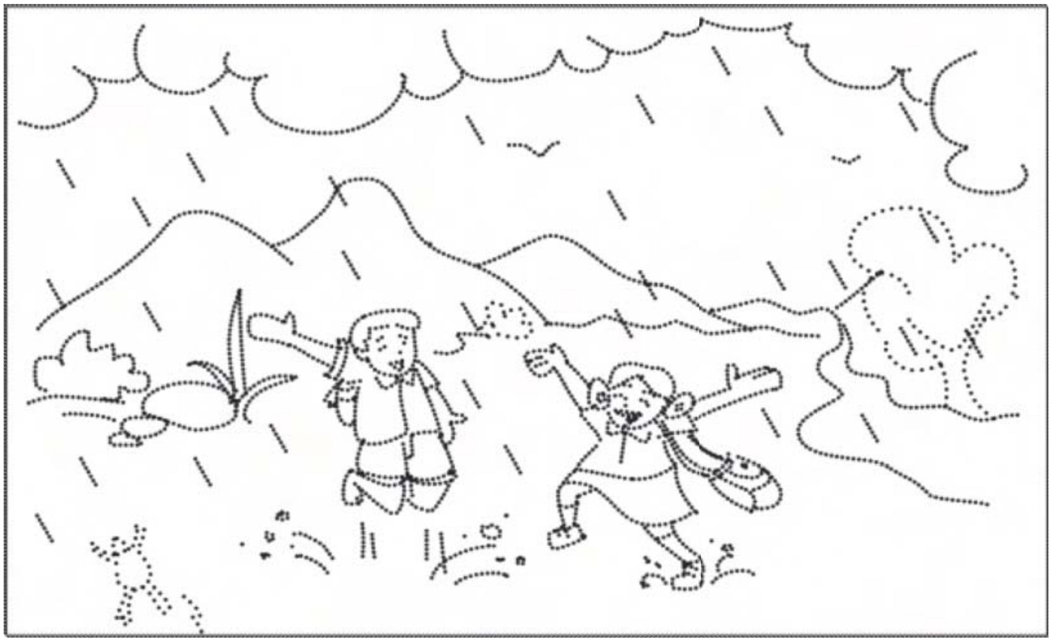

सोचिए और बताइए

- चित्र में बच्चे क्या कर रहे हैं ?
- आप बरसात आने पर क्या–क्या करते हैं ?
- आप कैसे अनुमान लगा सकते हैं कि बरसात आने वाली है?
- आपने भी रजत की तरह बरसात का आनंद लिया होगा और गीत गाए होंगे। आपके बरसात के अनुभव कक्षा में सुनाइए।
- अपने बुजुर्गों या परिवार से बरसात से संबंधित स्थानीय लोक गीत, कहानी आदि के बारे में पता कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

बारिश के खेल

आओ बच्चों, हम कक्षा में बारिश की आवाज़ बनाने का खेल खेलते हैं। सबसे पहले एक हाथ की पहली अंगुली दूसरे हाथ की हथेली पर दस बार

www.rajteachers.com

जल्दी–जल्दी बजाइए, फिर दो अंगुलियों से हथेली पर यही क्रिया दोहराइए। इस प्रकार तीन और चार अंगुली से यह क्रिया लगातार दोहराइए। इस प्रकार आने वाली आवाज को ध्यान से सुनिए। आपको यह आवाज किस तरह की लगती है? लगी ना बारिश जैसी आवाज– टप–टप–टप।

सोचिए और पता कीजिए

- बरसात आने पर आपको कैसा लगता है?
- बरसात के मौसम में आपको अपने आस–पास क्या–क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?

देखिए और बताइए

- चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
- इंद्रधनुष के रंगों को पहचानिए।

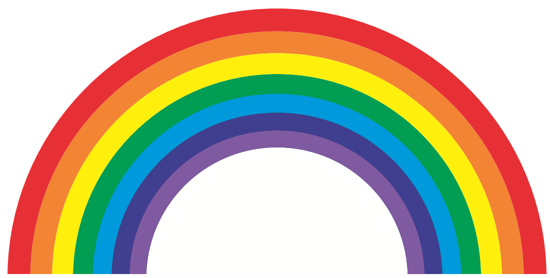

चित्र 7.2 इंद्रधनुष

- इंद्रधनुष के रंगों को नीचे से ऊपर के क्रम में भरिए।

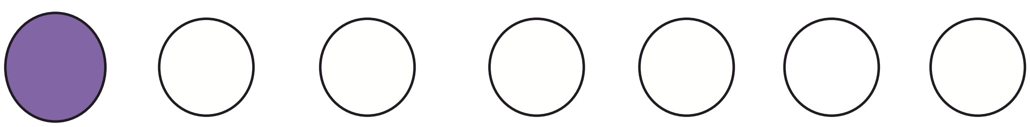

बैंगनी नीला आसमानी हरा

- बच्चो! इस बार बरसात के बाद आसमान में इंद्रधनुष बने तो देखना कि उसमें ये रंग क्या इसी क्रम में दिखाई देते हैं ?

शिक्षक निर्देश–शिक्षक इस गतिविधि को छात्रों के साथ मिल कर करें और इससे निकलने वाली ध्वनि में बरसात की आवाज का अनुभव करवाने का प्रयास करें।

www.rajteachers.com

आओ जाने, पानी कहाँ–कहाँ से मिलता है?

बरसात के पानी का बहुत–सा भाग नदियों, नालों में बहता हुआ समुद्रों तक जाता है। कुछ पानी भाप बनकर उड़ जाता है, कुछ पानी धरती

चित्र 7.3 जल के स्त्रोत

www.rajteachers.com

में समा जाता है। यही पानी, धरती के अंदर इकट्ठा होता है। इसी पानी को हम हैण्डपम्प, नलकूप या कुँओं के माध्यम से बाहर निकालकर पीने व अन्य कार्यों में उपयोग लेते हैं।

सोचिए और बताइए

- चित्र में आपको क्या दिखाई दे रहा है?
- आपके यहाँ किस स्रोत से पानी प्राप्त होता है?
- आपके घर में पीने के पानी को कैसे साफ किया जाता है?
- बच्चो! बरसात का पानी कहाँ जाता है और हमें कहाँ से मिलता है?

घरों में पानी

कुँए–बावड़ी, नल और तालाब से पानी सीधा पीने के उपयोग में नहीं लिया जाता है। पहले इसे पीने योग्य बनाने के लिए साफ किया जाता है।

चित्र 7.4 पानी का शुद्धीकरण

घरों में पानी को पीने योग्य बनाने के लिए कई तरीके काम में लिए जाते हैं जैसे– छानना, उबालना, फिटकरी द्वारा साफ करना, विभिन्न फिल्टर मशीन द्वारा साफ करना आदि। पानी सदैव छानकर भरना चाहिए। पानी लेते समय डंडीदार लोठे से निकालकर पीना चाहिए।

चित्र 7.5 (अ) पानी को छानकर भरते हुए

चित्र 7.5 (ब) पानी को डंडीदार लोठे से निकालते हुए

www.rajteachers.com

आजकल अधिकांश गाँवों व शहरों में पानी नल द्वारा पहुँचाया जाता है। इसके लिए नलकूप, कुँए, तालाब, झील और नदी के पानी को साफ कर मोटर पम्प से ऊँची टंकियों में चढ़ाया जाता है। वहाँ से पाइपों के द्वारा घरों तक भेजा जाता है।

आजकल पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। वृक्षों

चित्र 7.5 टंकी द्वारा पानी की आपूर्ति

की कटाई व पानी के दुरुपयोग से पानी की कमी होती जा रही है। अतः हमें पानी की कमी को पूरा करने के लिए बारिश के पानी को संग्रहित करना चाहिए एवं वृक्ष लगाने चाहिए।

शिक्षक निर्देशः—शिक्षक विद्यार्थियों को स्थानीय जल स्त्रोतों के बारे में जानकारी देंवे एवं जल शुद्धिकरण के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें।

www.rajteachers.com

हमने सीखा

- वर्षा ऋतु में आस–पास का वातावरण हरा–भरा हो जाता है।
- वर्षा के पश्चात आसमान में सतरंगी इंद्रधनुष भी देखा जा सकता है।
- वर्षा का बहता हुआ पानी नदियों और तालाबों में पहुँचते–पहुँचते अशुद्ध हो जाता है। अतः पानी को शुद्ध करके पीना चाहिए।
- पानी को शुद्ध करने के अनेक तरीके होते हैं जैसे– छानना, उबालना, फिल्टर करना, फिटकरी से साफ करना आदि।

गढ्ढे, पोखर, नदी, तालाब, झील, सरोवर, ताल।
वर्षा ऋतु में हो जाते हैं, जल से माला–माल।।

www.rajteachers.com

पाठ 8 जल ही जीवन का आधार

विमला विद्यालय से घर आई, तो देखा उसकी माँ पानी भर रही थी। उसने देखा पिता जी मटकी का बचा हुआ पानी फेंक रहे थे। विमला ने पिता जी से पूछा कि आप इस पानी को क्यों फेंक रहे हैं ? पिता जी–''बेटा, पानी बासी हो गया है। यह तो पिछले दिन का भरा हुआ है।'' विमला ने पिता जी से कहा, पिता जी इस पानी को दूसरे उपयोग में ले लेना चाहिए। ''आज हमारे गुरु जी ने कक्षा में बताया है कि हमें पानी की बचत करनी चाहिए। पानी बहुत सीमित मात्रा में है और गुरु जी ने हमें कविता भी सुनाई।''

''पानी बहुत ही काम का, प्यासा जाने मोल।
सोच–समझकर खर्च कर, पानी है अनमोल।।''

सोचिए और बताइए

- यदि आपके घर में दो दिन तक पानी नहीं आए तो क्या होगा ?
- आपके घर में पानी किस–किस में भरकर रखा जाता है ?
- आपके घर में पानी कौन भरता है ?

जल के दुरुपयोग

चित्र 8.1 जल के दुरुपयोग

www.rajteachers.com

चर्चा कीजिए और लिखिए

- इन चित्रों में क्या–क्या हो रहा है ?
- आपने इस तरह पानी को व्यर्थ होते हुए कहाँ–कहाँ देखा है ?
- आपके आस–पास के व्यक्ति किस–किस प्रकार से जल का दुरुपयोग करते हैं ?
- आप इस तरह जल के दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या करेंगे ?
- यदि आपको एक बाल्टी पानी दे दिया जाए और कहा जाए कि इतने पानी में ही पूरा दिन गुजारा करना है, तो आप किस तरह से पानी का उपयोग करेंगे ?

संजय बाड़मेर जिले में दूर ढाणी में रहता है। उसे नहाने के लिए प्रतिदिन आधी बाल्टी पानी मिलता है। वह पानी से नीम के पेड़ के पास में बैठ कर नहाता है। उसके नहाने का पानी पेड़ को भी मिल जाता है। जिससे पेड़ हमेशा हरा–भरा रहता है। उसके घर के सभी सदस्य ऐसा ही करते हैं।

राजस्थान के कई क्षेत्रों में पानी की कमी है। कई लोगों को दूर से पानी लाना पड़ता है। वे लोग पानी का उपयोग बड़ी मितव्ययता से करते हैं। बरसात के जल को इकट्ठा करने के लिए उनके घरों या ढाणियों में टाँके

शिक्षक निर्देश – पानी इकट्ठा करने के स्थानीय तरीकों पर बच्चों के साथ चर्चा करें। उनके अनुभवों को सुनें एवं जल व्यर्थ नहीं करना चाहिए इस पर जागरूकता बढ़ाएँ।

www.rajteachers.com

बने होते हैं। यदि हम बरसात का पानी इकट्ठा कर लें तो पानी की कमी को दूर किया जा सकता है।

चित्र 8.2 (अ) स्थानीय क्षेत्र की टंकी से लोग पानी भरते हुए

चित्र 8.2 (ब) दूर–दूर से पानी लाते लोग

www.rajteachers.com

देखिए और बताइए

- चित्र को देख कर बताइए कि पानी कहाँ से ला रहे हैं ?
- सुबह उठने से लेकर रात सोने तक आप पानी को किन–किन कामों में उपयोग लेते हैं, सूची बनाइए।

कुल्ला करना,————————,——————————,——————————,

——————————,——————————————,————————————

जल हमारे दैनिक कार्य जैसे– नहाना, धोना, पीना व खाना बनाने के काम तो आता ही है, इसके अलावा भोजन को पचाने, शरीर से उत्सर्जित पदार्थ निकालने में मदद करता है व शरीर के तापमान को नियंत्रित करने का काम भी करता है। अतः हमें भरपूर पानी पीना चाहिए।

अभी तक हमने पानी के उपयोग को समझा है। पेड़–पौधों और जीव–जंतु के लिए भी पानी की आवश्यकता होती है।

सोचिए और बताइए

- आपने आस–पास किन–किन जीव–जंतुओं को पानी पीते हुए देखा है ?
- आपने कभी पेड़–पौधों को पानी पीते हुए देखा है ?

सोचिए और बताइए

- आपके क्षेत्र में बरसात के जल का संग्रहण कैसे करते हैं ?
- आपके विद्यालय में जल संग्रहण कैसे किया जाता है ?

www.rajteachers.com

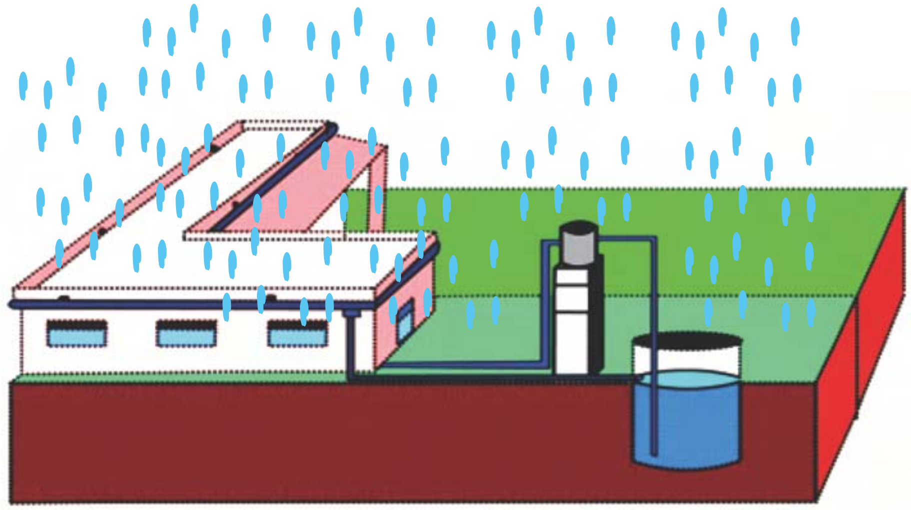

चित्र 8.3 बारिश के जल का संग्रहण

जल के उपयोग

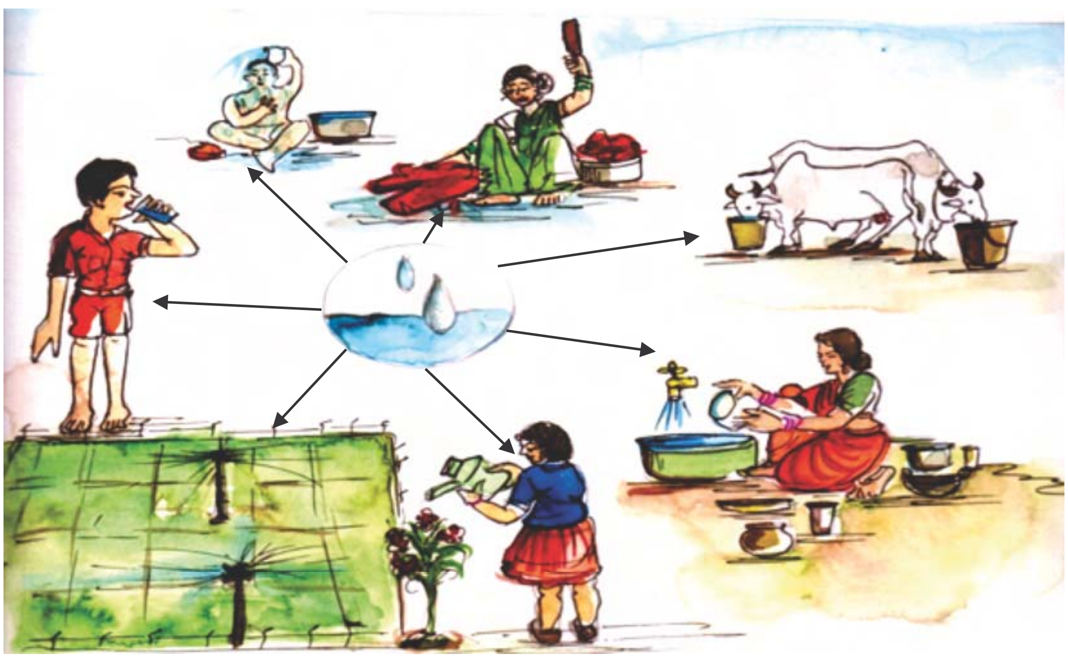

चित्र 8.4 जल के विभिन्न उपयोग

चर्चा कीजिए

- पेड़–पौधे पानी की आवश्यकता को कैसे पूरा कर लेते हैं ?

www.rajteachers.com

आपने आस–पास लोगों को पेड़–पौधों को पानी देते हुए देखा होगा। आपने यह भी देखा होगा कि किसान अपनी फसल को पानी से सींचते हैं। यह भी आपको पता होगा कि बरसात नहीं आने पर फसलें सूख जाती हैं। अतः पेड़–पौधों को भी पानी की जरूरत होती है। वे अपने लिए पानी जमीन के अंदर जड़ों द्वारा सोंखते हैं। जन्तुओं को भी पानी की आवश्यकता होती है। सभी जंतुओं को अलग–अलग मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है।

क्यों कम पानी पीता ऊँट ?

एक बार पर्याप्त मात्रा में पानी पीने के बाद बहुत दिनों तक ऊँट को जल की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसकी खाल मोटी होती है तथा इसे पसीना कम आता है। साथ ही इसका मूत्र गाढ़ा व मल शुष्क होता है। इस कारण उसके शरीर में पानी का खर्च कम होता है। आपने सुना होगा कि इसकी कूबड़ में पानी की थैली होती है परंतु वास्तव में इसकी कूबड़ में वसा होती है जो आवश्यकता पड़ने पर पानी में बदल जाती है। ऊँट रेगिस्तान का जहाज कहलाता है।

हमने सीखा

- पानी की बचत करना आवश्यक है।
- बरसात के पानी का संग्रहण करना चाहिए।
- पानी के कई उपयोग होते हैं।
- पेड़–पौधों को भी पानी की आवश्यकता होती है।
- रेगिस्तान का जहाज ऊँट कई दिनों तक पानी पिए बिना रह सकता है।

सोच समझ कर खर्चे पानी,
व्यर्थ बहाने में है हानि।

www.rajteachers.com

पाठ 9 भोजन में विविधता

चित्र 9.1 भोजन में विविधता

हम प्रतिदिन भोजन करते हैं। इसमें हम प्रायः रोटी, चावल, दाल, हरी सब्जी खाते हैं। क्या आपको पता है कि अलग–अलग स्थानों पर तरह–तरह का भोजन खाया जाता है ? कहीं गेहूँ की रोटी, कहीं मक्की की रोटी तो कहीं पर बाजरे की रोटी खाई जाती है।

www.rajteachers.com

सोचिए और चर्चा कीजिए

- आपके क्षेत्र में भोजन में मुख्यतया क्या–क्या खाते हैं ?
- अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग प्रकार का भोजन क्यों खाया जाता है ?
- नीचे तालिका में खाने की चीजों के नाम दिए गए हैं। यदि आपने इनको कहीं खाया है तो तालिका में लिखिए

भोजन	कहाँ खाया जाता है ?
डोसा	
कैर–सांगरी	
वड़ापाव	
मक्की की रोटी	
बाजरे की रोटी	
मालपुआ	
चावल	

भारत में अलग–अलग क्षेत्रों की जलवायु भिन्न–भिन्न होने से वहाँ अलग–अलग प्रकार की फसलें होती हैं। वहाँ रहने वाले लोग अधिकतर वही खाते हैं जो वहाँ की पैदावार होती है। जैसे– पंजाब में मक्की की रोटी–सरसों का साग, दक्षिण भारत में दाल–चावल, इडली– सांभर, डोसा, रसम आदि। समुद्र के पास रहने वाले व्यक्ति मछली व अन्य समुद्री जीवों को खाते

www.rajteachers.com

हैं। इसी प्रकार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भी भिन्न–भिन्न प्रकार का भोजन किया जाता है।

पता कीजिए और लिखिए

हमारे राज्य में कौन–कौनसे स्थान पर कौन–कौनसी चीजें खाने के लिए प्रसिद्ध हैं ? नीचे तालिका में लिखिए

खाने की चीजें	कहाँ की प्रसिद्ध है?	उसका स्वाद कैसा है ?
घेवर		
मावे की कचोरी		
तिलपट्टी		
पापड़–भुजिया		
अलवर पाक		
पेठे		
रबड़ी		
बाजरे का खीच		

त्योहारों पर आपके घर में तरह–तरह के पकवान बनते होंगे। इन्हें बनाने के लिए बहुत–सी कच्ची सामग्री की जरूरत होती है। जैसे– हलवा बनाने के लिए आटा, घी, शक्कर या गुड़ आदि व खीर बनाने में दूध, चावल, शक्कर आदि काम में लिए जाते हैं। इसी प्रकार हम अनेक चीजों का उपयोग अलग–अलग प्रकार के भोजन बनाने में करते हैं।

शिक्षक निर्देश–इसके अतिरिक्त भी स्थानीय क्षेत्र में अलग–अलग खाए जाने वाले भोजन पर चर्चा कीजिए।

www.rajteachers.com

देखिए और बताइए

चित्र में दी गई सामग्री से आपके घर में या बाहर क्या–क्या बनता है ?

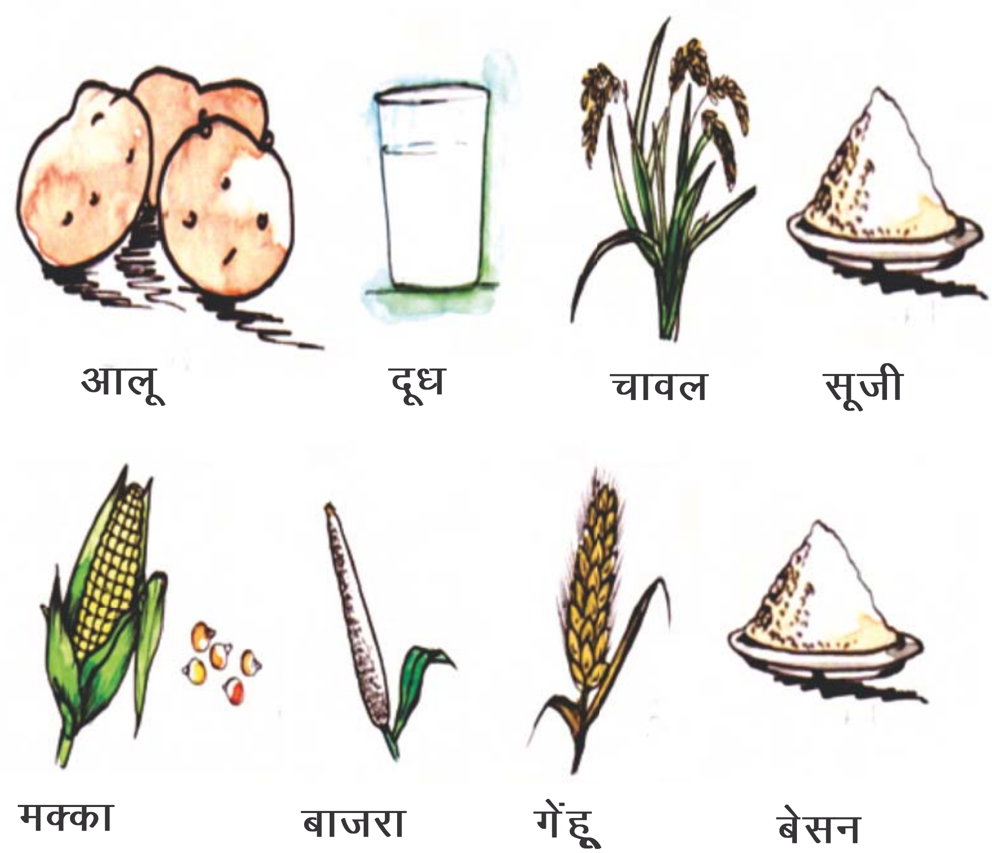

चित्र 9.2 विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री

आपके घर की रसोई में बहुत सी चीजें होती हैं। जैसे– पोहा, चीनी, आटा, बेसन आदि। हमें यह पता नहीं होता है कि ये शुरू में कैसी दिखती हैं? क्या ये चीजें पेड़–पौधों पर ऐसी ही लगी होती हैं ? कुछ पौधों तथा उनसे मिलने वाली खाने– पीने की चीजों के चित्र नीचे दिए

www.rajteachers.com

गए हैं, उनका सही मिलान कीजिए

पौधें	खाद्य सामग्री

चित्र 9.3 विभिन्न प्रकार के पौधे एवं उनसे
प्राप्त होने वाली खाद्य सामग्री

आपने पढ़ा कि हमारे राज्य एवं देश में अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग प्रकार का भोजन किया जाता है। आप कभी मेले में जाते हैं, तो आपने देखा होगा कि मेले में कई प्रकार की खाद्य सामग्री की दुकानें एवं स्टाल लगते हैं। जिसमें आपको अलग–अलग तरह की खाने की चीजें मिलती हैं। जिसमें कई गाँवों से आए लोग दुकान लगाते हैं।

सोचिए और बताइए

- आपके यहाँ भी मेले या हाट–बाजार लगते होंगे, उनमें कौनसी खाने की चीजें मिलती हैं? सूची बनाइए।
- आपके परिवार से हाट–बाजार में कौनसी चीजें बेचने हेतु भेजी जाती हैं? अथवा आपके परिवार द्वारा हाट बाजार से कौनसी चीजें खरीदी जाती हैं?

कहाँ–कहाँ से मिलता भोजन

हमारे भोजन में हम कई प्रकार की खाद्य वस्तुओं का उपयोग करते हैं हैं। ये खाद्य वस्तुएँ पेड़–पौधों या जंतुओं से मिलती हैं। जैसे– पेड़–पौधों से दाल, अनाज, फल, सब्जी आदि। जीव–जंतुओं से हमें दूध, शहद, अंडे–माँस आदि प्राप्त होते हैं। हमें अपने भोजन में विभिन्न फल, दालें, सब्जियों, दूध आदि का उपयोग करना चाहिए। ये भोजन की पोष्टिकता को बढ़ाते हैं तथा कुपोषण से मुक्ति दिलाते हैं।

पता कीजिए और लिखिए

आप भोजन में कई प्रकार की खाद्य वस्तुओं का उपयोग करते हैं।

www.rajteachers.com

पेड़–पौधों व जीव–जंतुओं से हमें कौन–कौनसी खाद्य सामग्री प्राप्त होती है? निम्नांकित सारणी को पूर्ण कर बताइए –

पौधों से प्राप्त होने वाली सामग्री	जंतुओं से प्राप्त होने वाली सामग्री
चीनी	दूध

यह भी जानिए

राजस्थान के प्रमुख खाद्यान्न

खाद्यान्न	अधिक बोया जाता है
बाजरा	पाली, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, जालोर, नागौर, चुरू
ज्वार	अजमेर, कोटा, बारां, झालावाड़, टोंक, पाली, चित्तौड़गढ़, सवाई–माधोपुर, करौली, भरतपुर व अलवर
मक्का	उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर
गेहूँ	राजस्थान में लगभग सभी जगह

शिक्षक निर्देश– भोजन की पौष्टिकता एवं कुपोषण पर बच्चों की समझ विकसित करे।

www.rajteachers.com

हमने सीखा

- अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग प्रकार का भोजन किया जाता है।
- हमें सभी प्रकार की सब्जियाँ एवं फल खाने चाहिए।
- सभी प्रकार की दालें, फल, सब्जी, दूध आदि भोजन की पोष्टिकता को बढ़ाते हैं।

भोजन में विविधता लाएँ, कुपोषण से मुक्ति पाएँ।

www.rajteachers.com

पाठ 10 भोजन बनाना

हम खाने में बहुत सी चीजें खाते हैं। कुछ चीजें कच्ची खाई जाती है। जैसे– केला, गाजर, ककड़ी, मूली आदि। कुछ चीजें पकाकर खाई जाती है। जैसे– रोटी, सब्जी, दाल, चावल आदि। फलों और सब्जियों को खाने व पकाने से पहले उन्हें अच्छी तरह धोना चाहिए। खाना पकाने से भोजन रूचिकर, मुलायम, स्वादिष्ट, जीवाणु मुक्त व पचने योग्य हो जाता है।

सोचिए और बताइए

- अपनी मनपसंद खाने की चीजों के नाम बताइए।
- ऐसी चीजों के नाम बताइए जो कच्ची खाई जाती हैं।
- ऐसी चीजों के नाम बताइए जो पकाकर खाई जाती हैं।
- ऐसी चीजों के नाम बताइए जो कच्ची भी खाई जा सकती हैं और पकाकर भी खाई जा सकती है।

भोजन को पकाने के लिए विभिन्न प्रकार के ईंधन, बर्तन, कच्ची सामग्री, जल आदि की आवश्यकता होती है। ईंधन का उपयोग विभिन्न प्रकार के चूल्हों के माध्यम से किया जाता है।

www.rajteachers.com

मिलान कीजिए

नीचे दिए गए चित्र में विभिन्न प्रकार के चूल्हों को उनके लिए उपयुक्त ईंधन से मिलान कीजिए

विभिन्न प्रकार के चूल्हें	ईंधन/स्रोत
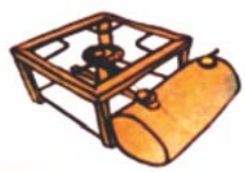	
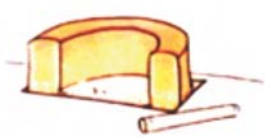	
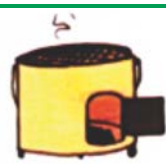	
	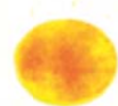

चित्र 10.1 विभिन्न प्रकार के चूल्हे व ईंधन/स्रोत

www.rajteachers.com

गाँव में भोजन पकाने के लिए चूल्हा, तंदूर व सिगड़ी का उपयोग किया जाता है। इनमें कोयले, उपले व सूखी लकड़ियाँ उपयोग में ली जाती हैं। आजकल घरों में गैस के चूल्हों पर खाना पकाया जाता है। कुछ व्यक्ति सौलर कुकर व हीटर का उपयोग खाना पकाने में लेते हैं। आजकल गाँवों में भी भोजन पकाने में सौर–ऊर्जा व गोबर–गैस प्रचलित है। सूर्य की रोशनी, सौर चूल्हे में ईंधन का कार्य करती है। खाना पकाने के लिए सामान्यतः गैस चूल्हा, सौर–चूल्हा, बिजली का हीटर, स्टोव, सिगड़ी, मिट्टी का चूल्हा आदि साधन काम में लिए जाते हैं।

पता कीजिए और लिखिए

- आपके घर में भोजन किस प्रकार के चूल्हे पर पकाया जाता है?

  ———————————————————————

- विद्यालय में पोषाहार का भोजन किस प्रकार के चूल्हे पर पकाया जाता है?

  ———————————————————————

- आपके साथी अथवा पड़ोस में आस पास भोजन किस–किस प्रकार के चूल्हों पर पकाया जाता है?

  ———————————————————————

विभिन्न प्रकार के बर्तन

आपने घर व अपने आस–पास में किसी समारोह में खाना बनते हुए देखा होगा,उसमें बहुत सारे बर्तनों की आवश्यकता होती हैं। जैसे– कढ़ाई, भगोना, खुरपा, चम्मच, संडासी (पकड़न), परात, बेलन, चकला, तवा आदि।

अपने घर की रसोई में देखकर बर्तनों को पहचानिए इनमें से कौन–कौनसे बर्तन खाना बनाने व कौन–कौन से बर्तन खाना खाने के काम आते हैं, सूची बनाइए।

www.rajteachers.com

पता कीजिए और लिखिए

आपकी रसोई या आस–पास में खाना पकाने के लिए उपयोग में आने वाले बर्तन के नाम एवं वे किन–किन चीजों से बने हैं, तालिका में भरिए

क्र.सं.	बर्तन का नाम	किस चीज से बना है?
1.	चम्मच	स्टील, प्लास्टिक
2.		
3.		
4.		
5.		

खाद्य सामग्री

आप सभी ने घर में खाना बनते हुए देखा होगा। क्या सभी प्रकार का खाना एक ही प्रकार के कच्चे सामान से तैयार किया जाता है? नहीं, खाने के व्यंजन अलग–अलग कच्चे सामान से तैयार किए जाते हैं।

पता कीजिए और लिखिए

क्र.सं.	खाने की चीजों के नाम	आवश्यक कच्ची सामग्री
1.	रोटी	आटा, पानी एवं नमक
2.	पूड़ी	
3.	आलू की सब्जी	
4.	खिचड़ी	
5.	दलिया	

www.rajteachers.com

- आपने देखा कि खाना बनाने में जल का उपयोग होता है। ऐसी खाने की चीजों के नाम बताइए, जिनको पकाने में जल का उपयोग नहीं होता है?

खाना बनाने की विधियाँ

घर पर खाना बनते समय आपने महसूस किया होगा कि रसोई से अलग–अलग तरह की खुशबू आती है। खाने को स्वादिष्ट और स्वास्थ्यप्रद बनाने के लिए उसे अलग–अलग तरीके से पकाते हैं। जैसे– उबालना, सेकना, भूनना, तलना आदि।

पता कीजिए और लिखिए

भोजन पकाने के इन तरीकों से और क्या–क्या बन सकता है? लिखिए

- उबालकर = आलू की सब्जी – – – – –
- भूनकर = हलवा – – – – – –
- सेककर = रोटी, – – – – – –
- तलकर = पकौड़ी, – – – – – –
- छोंककर = सब्जी, – – – – – –

www.rajteachers.com

अब हमें खाना पकाने के विभिन्न तरीकों का पता चल गया है।

चित्र 10.2 ग्रामीण परिवेश की रसोई में खाने बनाते हुए

सोचिए और लिखिए

- आपके घर में खाना कौन बनाता है?

  ____

- सामूहिक अवसरों पर खाना कौन बनाते है?

  ____

- होटल, रेस्त्राँ आदि में खाना कौन बनाता है?

  ____

इस प्रकार हम देखते हैं कि केवल महिलाएँ ही नहीं पुरुष भी खाना बनाते हैं। सामान्यत: घरों में महिलाएँ खाना बनाती हैं। हमें भी उनका सहयोग करना चाहिए।

www.rajteachers.com

सोचिए और चर्चा कीजिए

- खाना बनाते समय क्या–क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?
- नीबू की शिकंजी किस प्रकार बनाई जाती है? क्या इसे बिना पकाए तैयार कर सकते हैं?

हमने सीखा

- हम भोजन के रूप में कई चीजों को पकाकर व कई चीजों को कच्चा ही खाते हैं।
- भोजन मिट्टी के चूल्हे, गैस के चूल्हे, सौर चूल्हे, हीटर एवं सिगड़ी आदि पर पकाया जाता है।
- खाना पकाने व खाना खाने के कई बर्तन होते हैं। जो अलग–अलग वस्तुओं से बने होते हैं।
- खाना विभिन्न तरीकों से बनाया जाता है। जैसे– उबालकर, भूनकर, सेककर, तलकर, छोंककर आदि।

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक विद्यार्थियों से चर्चाकर उनकी पसंद के व्यंजनों के नाम तथा उनको पकाने की विधि समझाए। सामूहिक अवसरों पर व होटल, रेस्त्रां में खाने पकाने कार्य पुरूषों द्वारा भी किया जाता है, इसको समझाते हुए छात्रों में जेण्डर संवेदनशीलता विकसित करें।

**"फल एवं सब्जियों का उपयोग धोकर करना चाहिए।
भोजन एवं फलों को ढककर रखना चाहिए।
आवश्यकता से अधिक भोजन नहीं करना चाहिए"।**

www.rajteachers.com

हमारे गौरव–I

नागार्जुन

प्राचीन भारत में नागार्जुन एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्री थे। वे जन्म से ही प्रतिभाशाली थे। उनका जन्म छत्तीसगढ़ अंचल के बालूका ग्राम में हुआ। उन्होंने वेद, वेदांगों का अध्ययन शीघ्र ही पूर्ण कर लिया था।

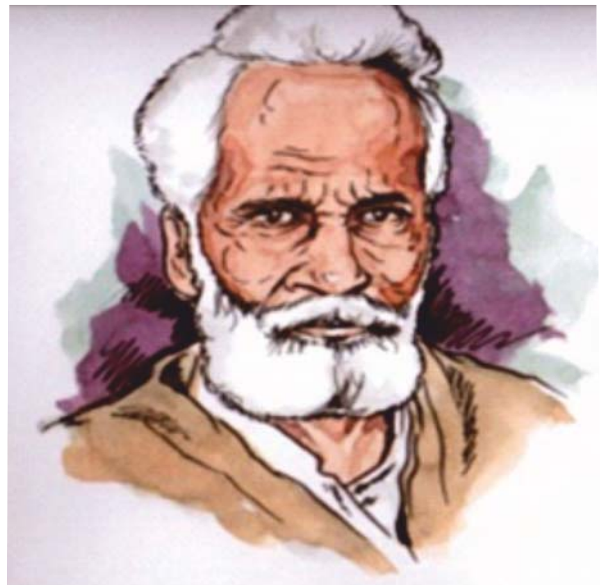

चित्र 12.1 नागार्जुन

कालान्तर में नागार्जुन ने बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया व बौद्धमत में दीक्षित हो गये। रसायन शास्त्र के क्षेत्र में 'रस हृदय' नामक ग्रंथ में धातुकर्म पर कार्य का विवरण मिलता है। उन्होंने पारे को शोधकर उसका भष्म बनाने की विधि भी ज्ञात की। चिकित्सा के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक ग्रंथ लिखे है।

नागार्जुन एक महान दार्शनिक थे। उनका दर्शन 'शून्यवाद' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय के 'माध्यमिक सिद्धान्त' को प्रारम्भ करने का श्रेय भी इन्हें ही है। उन्होंने वैदिक व बौद्ध दर्शन में समन्वय स्थापित कर भारत की राष्ट्रीय एकात्मकता में महान योगदान दिया था। आन्ध्रप्रदेश में कृष्णा नदी पर बने विशाल बांध का नामकरण उनकी स्मृति में 'नागार्जुन सागर' किया गया है।

www.rajteachers.com

चर्चा कीजिए

- नागार्जुन की जीवनी से हमें क्या सीख मिलती है?

जगदीश चंद्र बसु

भारत के एक महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु थे। इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में रामायण एवं महाभारत का अध्ययन किया। वे अपनी पढ़ाई के साथ–साथ जिमनास्टिक तथा मुक्केबाजी का शौक भी रखते थे। विद्यालय समय में वे अपनी बचत व रिक्त समय को पेड़–पौधों एवं जीवों को पालने और संभालने में लगाते थे।

उन्होंने भौतिकी और जीव विज्ञान दोनों में अनेक आविष्कार किए। उन्होनें बिना तार संबंध जोड़े 23 मीटर दूरी पर विद्युत घंटी बनाकर तथा पिस्तौल चलाकर विद्युत तरंगों के प्रवाह का प्रदर्शन किया। इनकी खोज मार्कोनी और अन्य वैज्ञानिकों से अधिक उन्नत थी परंतु उन्होंने इनका पेटेंट नहीं कराया। इनकी मान्यता थी कि वैज्ञानिक खोजें सार्वजनिक संपत्ति है। उस पर किसी का एकाधिकार उचित नहीं। वास्तव में भारतीय सोच सदा यही रही है।

उन्होंने प्रदर्शित किया कि पेड़–पौधे संवेदनशील होते हैं। वे भी हमारी तरह दुःख एवं प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। उन्होंने समाज के सहयोग से ''बसु विज्ञान मंदिर'' की स्थापना की।

चित्र 12.2 जगदीश चंद्र बसु

www.rajteachers.com

चर्चा कीजिए और लिखिए

- बिना तार के कौन–कौन से यंत्र चलते हैं?

  ____

- पेटेंट क्या होता है?

  ____

- जगदीश चंद्र बसु ने अपने आविष्कारों का पेटेंट क्यों नहीं कराया?

  ____

  ____

शिक्षक निर्देश :– बच्चों को आविष्कार एवं पेटेंट के बारे में विस्तार से समझाएँ।

भगिनी निवेदिता

भगिनी निवेदिता इंग्लैंड की रहने वाली थी। उनका नाम मार्गरेट नोबल था। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर सेवा कार्य अपनाया था। वे अन्य लोगों के दोहरे चरित्र से दुःखी थी। इसी समय वे स्वामी विवेकानंद के व्याख्यान से प्रभावित हुई और उन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु मान लिया। स्वामी विवेकानंद ने ही उन्हें ''निवेदिता'' नाम दिया। वे मानव मात्र की सेवा को ही अपना धर्म समझती थी।

चित्र 12.3 भगिनी निवेदिता

www.rajteachers.com

कलकत्ता में फैले प्लेग के दौरान वे सफाई कार्य में जुट गई व रोगियों की सेवा की। उनसे प्रभावित होकर अनेक लोग आगे आए। बंगाल की भयंकर बाढ़ के समय भी उन्होंने अद्‌भुत कार्य किया। इससे प्रभावित होकर श्री रवींद्रनाथ ठाकुर ने उन्हें ''लोकमाता'' कहा।

सोचिए व लिखिए

- अपने आस–पास के उन लोगों के नाम लिखिए, जो बिना भेदभाव के लोगों की सेवा करते हैं।

  ____

  ____

- आप अपने विद्‌यालय में कौन–कौनसे सेवा कार्य करते हैं?

  ____

  ____

- यदि आपको विद्‌यालय से बाहर सेवा करने का अवसर मिले तो आप कौन–कौन से सेवा के कार्य करेंगे?

  ____

  ____

- भगिनी निवेदिता भारत क्यों आई थी?

  ____

  ____

www.rajteachers.com

महात्मा गाँधी

चित्र 12.3 महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी के जीवन पर बचपन से ही उनकी माँ के संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा था। उनके द्वारा बचपन में देखे गए नाटक सत्यवादी हरिशचंद्र और श्रवण कुमार से प्रभावित होकर उन्होंने आजीवन सत्य का पालन व माता–पिता की सेवा का संकल्प लिया। वे रोज गीता का पाठ करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने गोरे और काले का भेद मिटाया। उन्होंने छुआछूत की कुप्रथा के विरुद्ध संघर्ष किया तथा हरिजनों के उद्धार के लिए काम किया। वे ग्राम स्वराज की स्थापना करना चाहते थे, साथ ही वे कुटीर उद्योग द्वारा गाँवों को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। उन्होंने सत्याग्रह और अंहिसा को अपना शस्त्र बनाकर भारत को आजादी दिलवाई।

सोचिए और बताइए

- क्या आपने कोई सेवा कार्य करने का संकल्प लिया है?

  ——————————————————————————

- आपने कौन–कौनसे नाटक देखें है? तथा अपने जीवन में क्या सकंल्प लिया?

  ——————————————————————————

www.rajteachers.com

यह भी कीजिए

- पुस्तकालय से श्रवण कुमार की कहानी की पुस्तक ढूंढ कर पढ़िए।

बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा का जन्म छोटा नागपुर में हुआ। बचपन में वे बाँसुरी की मनमोहक ध्वनि से सबको मोहित कर लेते थे। उनके शिक्षक जयपाल नाग ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ाई की सलाह दी। शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे श्री आनंद पांडे के संपर्क में आए। उनसे भारतीय संस्कृति के रहस्यों को जाना। उन्होंने रामायण, महाभारत, गीता व हितोपदेश का अध्ययन किया। उनकी ख्याति चारों ओर फैलने लगी। बिरसा मुंडा के प्रवचन सुनने दूर–दूर से लोग आते थे। किसी ने उनकी शिकायत अंग्रेजों से कर दी। उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर दो वर्ष के लिए कारावास की सजा सुनाई। वहीं से उनके मन में क्रांति का भाव आया। जेल से छूटकर वे एक महान क्रांतिकारी बने।

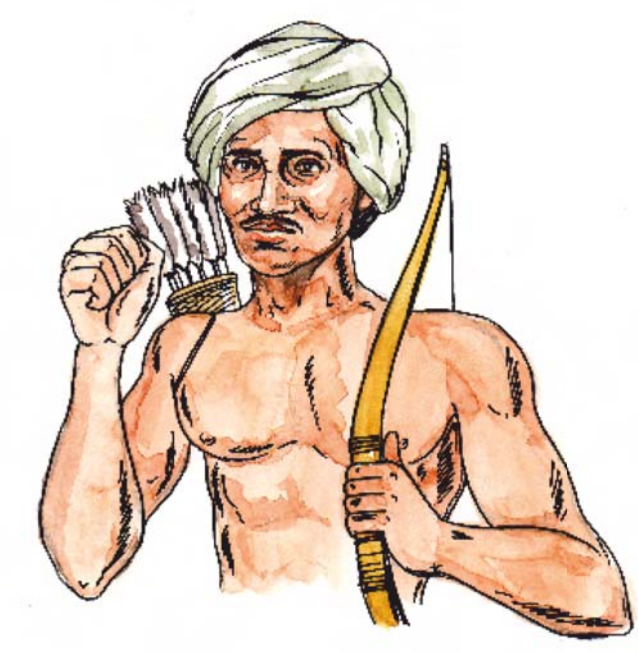

चित्र 12.5 बिरसा मुंडा

www.rajteachers.com

सोचिए व लिखिए

- आपके गाँव या शहर में प्रवचन देने कौन–कौन आते हैं?

  ____

- बिरसा मुंडा के मन में क्रान्ति का भाव क्यों आया होगा?

  ____

- आप अच्छे लोगों से क्या–क्या सीखते हैं?

  ____

  ____

हमने सीखा

- नागार्जुन एवं जगदीश चंद्र बसु का विज्ञान की प्रगति में अनूठा योगदान है।
- भगिनी निवेदिता ने विदेशी होते हुए भी मानव धर्म को सर्वोपरि मानकर भारत में जीवनपर्यंत समाज सेवा की।
- महात्मा गाँधी ने सत्य व अहिंसा की राह पर चलकर भारत को आजादी दिलवाई।
- बिरसा मुंडा वेदों के ज्ञाता और महान् क्रांतिकारी थे।

प्रेम, त्याग, शुचिता अपनाओ।
इस जीवन को सफल बनाओ।।

www.rajteachers.com

पाठ 13 त्योहार, पर्व और जयंती

त्योहार और पर्व हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग है। हमारे यहाँ विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक त्योहार और पर्व मनाए जाते हैं।

चर्चा कीजिए और लिखिए

- हम कौन–कौन से त्योहार मनाते हैं?

  ____

  ____

- हमारे राष्ट्रीय पर्व कौन–कौनसे हैं?

  ____

  ____

- आपके विद्यालय में कौन–कौनसे राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं?

  ____

  ____

- राष्ट्रीय पर्व पर आप विद्यालय में क्या–क्या कार्य करते हैं?

  ____

- हमारे राष्ट्रीय ध्वज में कितने रंग हैं?

  ____

- ये रंग हमें क्या संदेश देते हैं?

  ____

www.rajteachers.com

स्वतंत्रता दिवस

चित्र 13.1 तिरंगा

हमारा देश 15 अगस्त, सन् 1947 को आजाद हुआ था। इस दिन को हम स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। इस दिन भारत के प्रधानमंत्री भारत की राजधानी दिल्ली के लाल किले पर झंडा फहराते हैं। सभी देशवासी इस पर्व को बड़ी धूम–धाम से मनाते हैं।

दीपावली

यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्री राम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या लौटे थे। इस त्योहार पर सभी अपने घरों की अच्छी तरह सफाई कर सजावट करते हैं। घरों में तरह–तरह की मिठाइयाँ व पकवान बनाए जाते हैं। सभी नए कपड़े

चित्र 13.2 दीपावली पर जलते दीपक से सजावट करते हुए

www.rajteachers.com

पहनते हैं। इस दिन ''धन की देवी'' लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है। घर–घर दीप जलाए जाते हैं।

ईद

रमजान के महीने में मुसलमान रोजा रखते हैं। महीने के अंत में चाँद दिखाई देने पर ईद मनाई जाती है। सभी मुस्लिम लोग सामूहिक नमाज पढ़ते हैं और एक–दूसरे से गले मिलकर खुशियाँ बाँटते हैं। इस दिन विशेष रूप से मीठी सेवइयाँ बनाई जाती हैं।

चित्र 13.3 ईद

क्रिसमस

क्रिसमस ईसाइयों का प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार 25 दिसंबर को ईसा मसीह के जन्म की खुशी में मनाया जाता है। इस दिन घरों में क्रिसमस ट्री सजाया जाता है और विशेष रूप से खाने के लिए केक बनाया जाता है।

चित्र 13.4 क्रिसमस ट्री

www.rajteachers.com

पता कीजिए और लिखिए

- आपको सबसे अच्छा त्योहार कौनसा लगता है?

  ____

- आपके यहाँ और कौन–कौनसे त्योहार मनाए जाते हैं?

  ____

- आप त्योहारों पर क्या करते हैं?

  ____

- आप पर्व और त्योहार पर क्यों खुश होते हैं ?

  ____

महावीर जयंती

चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की तेरस के दिन भगवान महावीर का जन्म हुआ था। ये जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे। उन्होंने अहिंसा का उपदेश दिया था। प्रतिवर्ष इस दिन इनकी जयंती मनाई जाती है।

चित्र 13.5 महावीर स्वामी

www.rajteachers.com

गुरुनानक जयंती

चित्र 13.6 गुरुनानक देव

गुरुनानक साहेब का जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा को हुआ था। ये सिक्ख समुदाय के प्रथम गुरु थे। इन्होंने भाईचारे का संदेश दिया। इस दिन गुरुद्वारों में गुरुवाणी का पाठ किया जाता है और कढ़ाह प्रसाद बाँटा जाता है।

चर्चा कीजिए और लिखिए

- भगवान महावीर ने क्या उपदेश दिया था ?

  ....

- गुरुवाणी क्या है?

  ....

- हमारे यहाँ सामूहिक रुप से कब–कब प्रसाद वितरित किया जाता है?

  ....

  ....

- आपके यहाँ कौन–कौनसी जयंतियों पर शोभायात्रा निकाली जाती है?

  ....

  ....

www.rajteachers.com

पाबूजी

चित्र 13.7 पाबूजी

पाबूजी लोक देवता है। वे उन लोगों में से थे, जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अपना सारा जीवन दाँव पर लगा दिया था। राजस्थान में इनके यश गान स्वरुप पावड़े (गीत) गाए जाते हैं।

तेजाजी

चित्र 13.8 तेजाजी

मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में तेजाजी को लोक देवता के रुप में पूजते हैं। लाछा गूजरी की गायें चुराकर ले जाने पर लाछा की प्रार्थना से वचनबद्ध होकर तेजाजी ने गायें छुड़वाई। इस संघर्ष में इनके प्राण न्योछावर हो गए।

चर्चा कीजिए और लिखिए

- आपके क्षेत्र में कौन–कौनसे लोक देवता हैं ? उनके नाम बताइए।

  ____

www.rajteachers.com

- इन लोक देवताओं को किस कार्य के लिए पूजा जाता है ?

____

____

हमने सीखा

- हमारा राष्ट्रीय पर्व ''स्वतंत्रता दिवस'' 15 अगस्त को मनाया जाता है।
- दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है। सभी लोग घरों पर दीपक जलाते हैं।
- ईद पर सभी मुस्लिम लोग नमाज पढ़ते हैं व सभी मिलकर खुशियाँ मनाते हैं।
- महावीर जयंती चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की तेरस को मनाई जाती है।

मेरे देश के पर्व और त्योहार,
पूरे विश्व को भाते ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
मिलजुल कर इन्हें मनाते ।।

www.rajteachers.com

आओ, मेरे घर

आपने देखा होगा कि सभी जीव–जंतु कहीं न कहीं रहते हैं। जैसे– पक्षी घोंसलों में, साँप और चूहा बिल में, मकड़ी जाले में तथा मधुमक्खी छत्ते में, वैसे ही हमें भी रहने के लिए घर की आवश्यकता होती है। घर कैसा भी हो, हमें सुरक्षा प्रदान करता है। यह हमें सर्दी–गर्मी और बरसात से बचाता है। घर का मतलब सिर्फ भवन नहीं होता। जैसे– विद्यालय का भवन, पंचायत भवन इत्यादि घर नहीं हैं।

घर का मतलब रहने की वह जगह है। जहाँ हम परिवार के साथ रहते हैं।

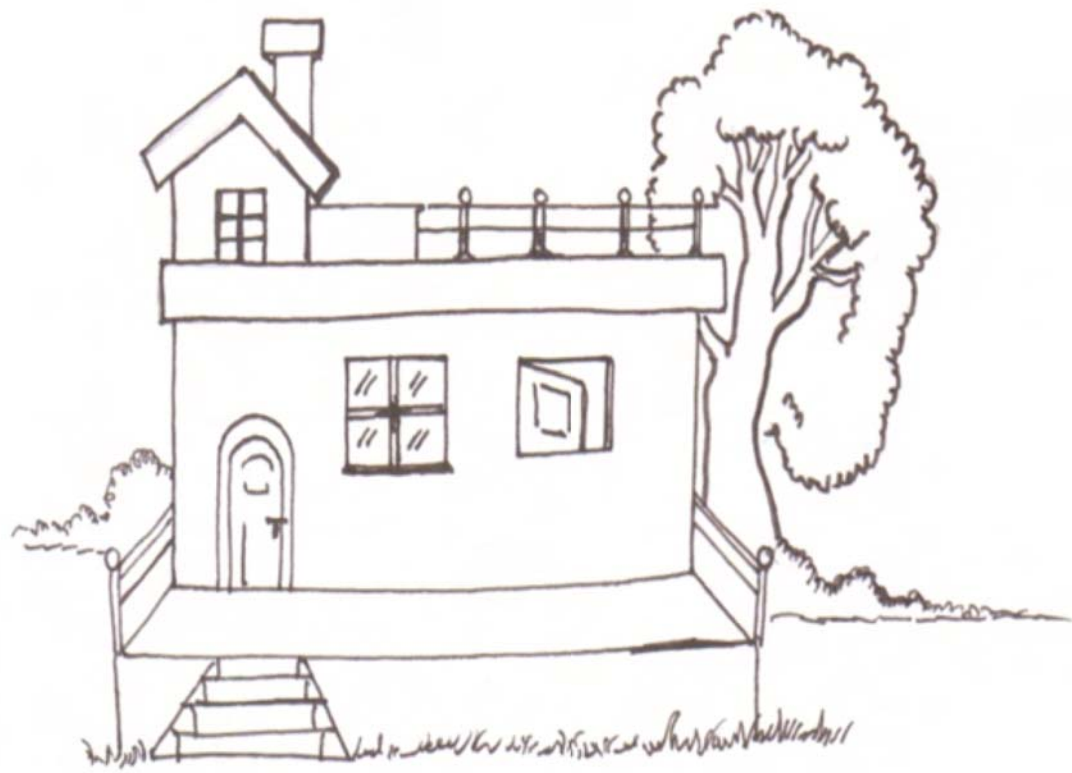

चित्र 14.1 घर के रेखाचित्र में रंग भरिए

www.rajteachers.com

राकेश का परिवार अजमेर में रहता है। आपके घर की तरह उसका भी घर है। राकेश अपने घर के बारे में हमें बता रहा है।

यह मेरे घर का प्रवेश द्वार है। यहीं से हम घर में प्रवेश करते हैं। दादी जी दरवाजे के चोखट पर बंदनवार (माला) बाँधती है।

चित्र 14.2 प्रवेश द्वार

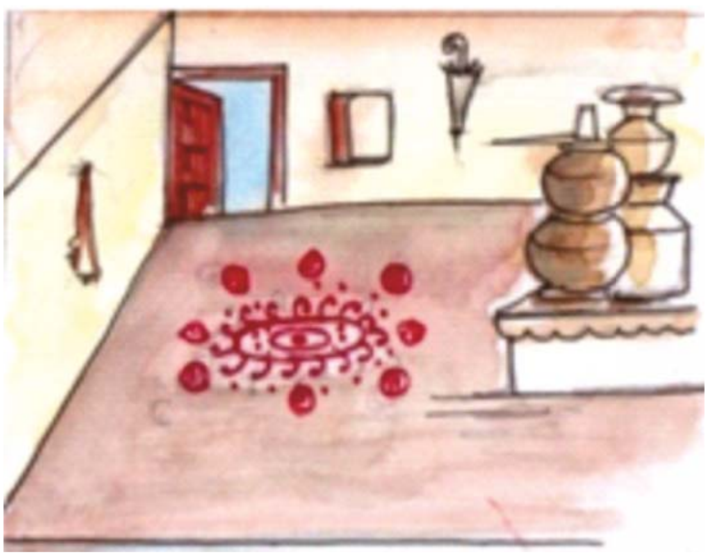

चित्र 14.3 घर का आँगन

यह हमारे घर का आँगन है। मैं और मेरे चचेरे भाई–बहिन यहाँ बैठ कर दादा जी से कहानियाँ सुनते हैं। कभी–कभी मेरी माता जी बड़ियाँ, पापड़ और राबोड़ी बनाकर यहीं पर सुखाती हैं।

www.rajteachers.com

यह मेरे घर का बैठक कक्ष है। हम मेहमानों का स्वागत यहीं करते हैं। मेहमान आने पर हमें अच्छा लगता है। मैं उन्हें पानी पिलाता हूँ। मेरी माँ चाय बनाकर लाती है।

चित्र 14.4 बैठक कक्ष

हमारे घर में चार शयन कक्ष हैं। यह हमारा शयन कक्ष है। इसमें हम सोते हैं। मैं अपने दादा जी के साथ सोता हूँ। मेहमानों के सोने के लिए अलग कक्ष है।

चित्र 14.5 शयन कक्ष

www.rajteachers.com

चित्र 14.6 रसोई घर

यह हमारा रसोई घर है। यहाँ खाना बनाया जाता है। हम सभी यहीं बैठकर एक साथ खाना खाते हैं और घर की बातें करते हैं।

चित्र 14.7 गौशाला

यह हमारी गौशाला है। हमारी गायें यहीं रहती हैं। प्रतिदिन मेरी माँ गायों का दूध निकालती है। मेरे पिता जी उन्हें चारा देते हैं। मैं बछड़ों के साथ खेलता हूँ।

www.rajteachers.com

यह हमारा स्नानघर है। यहाँ हम नहाते हैं। प्रतिदिन सुबह सूर्योदय से पहले घर के सभी सदस्य स्नान कर लेते हैं।

चित्र 14.8 स्नानघर

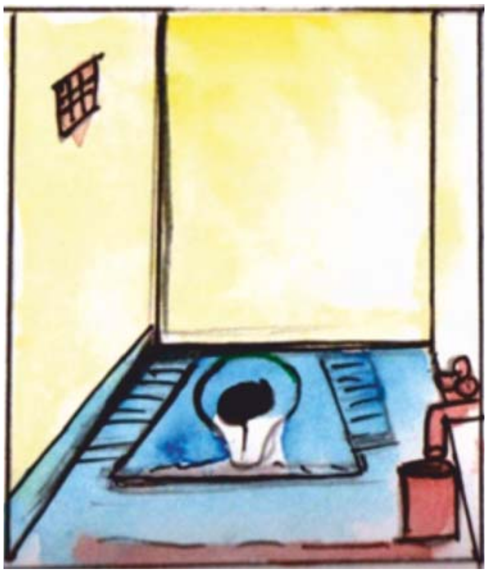

चित्र 14.9 शौचालय

यह हमारा शौचालय है। मेरे दादा जी कहते हैं बाहर शौच करने नहीं जाना चाहिए। इससे बीमारियाँ फैलती हैं। हम स्वयं शौचालय को साफ करते हैं।

सोचिए और लिखिए

- जिस प्रकार राकेश ने अपने घर के बारे में बताया। आप भी अपने घर के बारे लिखिए।

____

____

www.rajteachers.com

- घर में शौचालय होना क्यों आवश्यक है?

____

____

तरह–तरह के घर

गाड़ी में घर

इस चित्र को देखिए। आपने गाँव या शहर में कभी इस तरह के लोगों को देखा होगा। ये लोग एक स्थान पर घर बना कर नहीं रहते। इनका पूरा घर गाड़ी में रहता है। आपको पता है कि ये ऐसे क्यों रहते हैं? इसके पीछे एक कहानी है –

चित्तौड़ पर जब मुगलों का आक्रमण हुआ था। तो कई जातियाँ वहाँ से विस्थापित हो गई थी। उनमें से एक गाड़ोलिया लुहार भी थे। इनके पूर्वजों ने प्रण लिया था कि जब तक हम संपूर्ण मेवाड़ को आजाद नहीं करवा लेते, तब तक घर में नहीं रहेंगे। वे घर का त्याग कर महाराणा के साथ जंगलों में रहने लगे।

चित्र 14.10 गाड़ोलिया लुहार

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

- यदि आपको इस तरह रहना पड़े तो क्या अनुभव करेंगे?

  ____

- उन्हें सर्दी, गर्मी, बरसात में किस तरह की समस्याएँ आती होगी?

  ____

- इनके बच्चे कहाँ पढ़ने जाते होंगे?

  ____

  ____

बहुमंजिला इमारतें

आपने शहरों में ऐसी इमारतें देखी होगी। शहरों में जमीन कम होने के कारण ऐसी इमारतें बनाई जाती हैं, ताकि कम स्थान पर अधिक लोग रह सकें।

चित्र 14.11 बहुमंजिला इमारतें

www.rajteachers.com

ढालू छतों के घर

चित्र में बताए गए घर मिट्टी की मोटी दीवारों से बने होते हैं। इनकी छतें ढालू होती हैं। अलग–अलग क्षेत्रों में छतें अलग–अलग सामग्री से बनाई जाती हैं।

चित्र 14.12 ढालू छतों के घर

सोचिए और बताइए

- बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले लोग ऊपरी मंजिल पर कैसे जाते होंगे?
- बहुमंजिलों में रहने वाले लोगों को कौन–कौनसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा?
- मकानों की छतें ढालू क्यों बनाई जाती हैं?

टेंट या तंबू

प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, भूकंप आदि के कारण लोग बेघर हो जाते हैं। उस समय उनके लिए तंबू लगाकर अस्थायी आवास की व्यवस्था की जाती है। हमारे देश के सैनिक जो देश की रक्षा के लिए

चित्र 14.13 तंबू

www.rajteachers.com

दिन–रात सीमा पर तैनात रहते हैं। वे भी दुर्गम स्थानों पर कई दिनों तक तंबुओं में रहते हैं।

यह भी कीजिए

आप एक डिब्बा एवं अन्य सामग्री को इकट्ठा कर घर का मॉडल बनाइए।

हमने सीखा

- वह स्थान जहाँ हम परिवार के साथ रहते हैं, घर कहलाता है।
- घर में बैठक कक्ष, शयन कक्ष, रसोई, खुला आँगन, स्नानघर व शौचालय आदि होता है।
- घर भी अलग–अलग तरह के होते हैं जैसे– गाड़ी में घर, ढालू छतों के घर, बहुमंजिला इमारतें आदि।

शिक्षक निर्देश – छात्रों को तरह–तरह के घर के मॉडल बनाने हेतु प्रेरित करें।

सबसे अच्छा, सबसे न्यारा
अपना घर है सबसे प्यारा

www.rajteachers.com

पाठ 15 मेरा घर और उनका घर

सीता पलंग पर लेटी थी कि अचानक उसकी नजर बल्ब के पास घूम रही छिपकली पर पड़ी। सीता सोचने लगी, अरे! हमारे घर में हमारे अलावा और भी जीव–जंतु रहते हैं। उसने सोचा कि छिपकली हमारे घर में क्या कर रही है। तभी उसे अपने कान के पास मच्छर की भिनभिनाहट सुनाई दी।

सीता ने फिर नजर घुमाई तो देखा, एक चिड़िया छत पर लगी कुंडी पर आराम से सो रही है। वह सोचने लगी, यह चिड़िया दिनभर कहाँ रहती होगी? क्या जीव–जंतुओं के भी हमारी तरह घर होते हैं ? आओ जानें

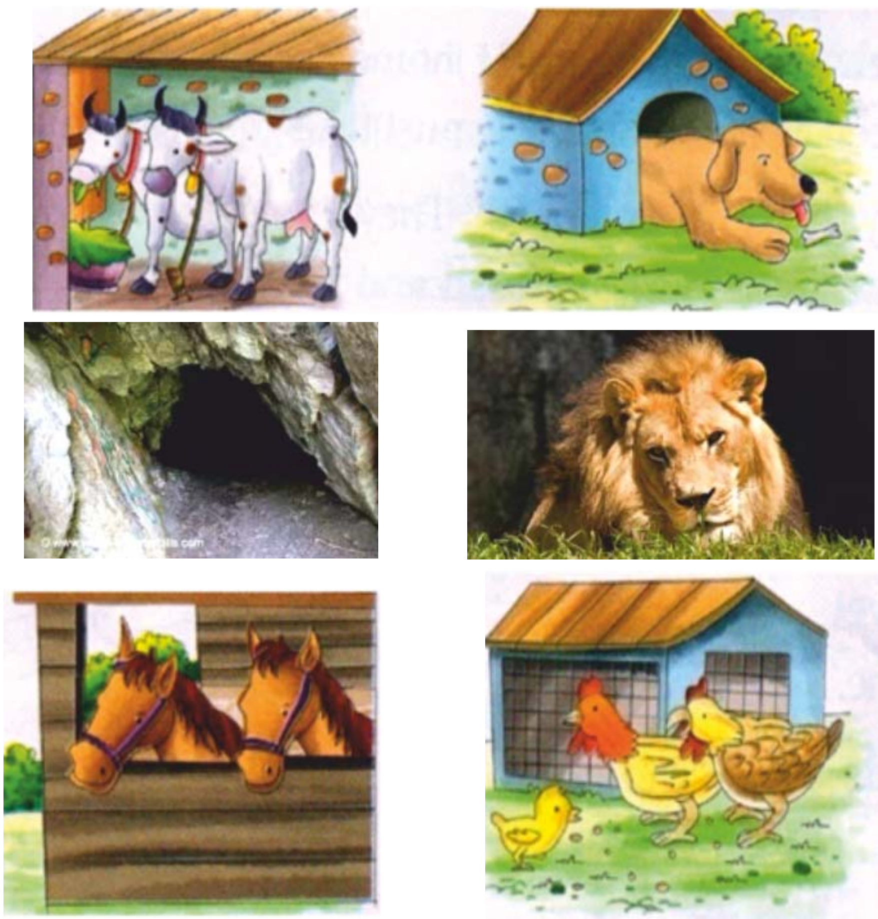

चित्र 15.1 जीव–जंतुओं के आवास

www.rajteachers.com

जीव–जंतुओं का उनके आवास से मिलान कीजिए

जीव–जंतु **उनका आवास**

चित्र 15.2 घर के आस–पास के जीव–जंतु

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

चित्र 15.3 घर और घर के आस–पास दिखाई देने वाले जीव–जंतु

- चित्र को देखिए और बताइए पालतू जीव–जंतु कौन–कौनसे हैं ?

  ____

- पालतू जीव–जंतु हमें क्या–क्या देते हैं ?

  ____

- रात्रि में कौन–कौनसे जीव–जंतु दिखाई देते हैं ?

  ____

www.rajteachers.com

- कौन–कौनसे जीव–जंतु हमें नुकसान पहुँचाते हैं ?

  ____

- इन जीव–जन्तुओं को आपने कहाँ–कहाँ देखा है?

  ____

नीचे दी गई तालिका को भरिए

क्र.सं.	जीव–जंतु का नाम	हम इन्हें क्यों पालते हैं
1	गाय	
2	बैल	
3		सवारी करने के काम में
4		अंडे देते हैं
5	गधा	
6	ऊँट	
7		दूध के लिए
8		घर की रखवाली के लिए
9	घोड़ा	

www.rajteachers.com

जीव–जंतु जिन्हें हम पालते हैं, वे पालतू जानवर कहलाते हैं। ये हमें खुशी देते हैं तथा हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। इन्हें हमारे प्यार व देखभाल की आवश्यकता होती है। हमें इन्हें पर्याप्त भोजन व साफ पानी देना चाहिए एवं समय–समय पर पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

पता कीजिए और लिखिए

- लोग पालतू जानवरों की देखभाल के लिए कौन–कौनसे काम करते हैं?

  ____

  ____

नीचे दी गई तालिका को भरिए

पालतू जानवरों के नाम	देखभाल के लिए किए जाने वाले कार्य		
	सुबह	दोपहर	शाम
कुत्ता			

www.rajteachers.com

सीता ने घर के बाहर पेड़ पर देखा कि चिड़िया अपने घोंसले में आराम से बैठी थी। वह सोचने लगी कि हम अपनी जरूरतों के लिए घर बनाते हैं। उसी प्रकार जीव–जंतु भी अपनी जरूरतों के अनुसार घर बनाते हैं, जैसे– मधुमक्खी अपना छत्ता बनाती है, वैसे ही अन्य जीव–जंतु भी अपने घर बनाते हैं लेकिन कुछ जीव–जंतु जैसे– छिपकली, मक्खी, मच्छर आदि के स्थायी आवास नहीं होते हैं।

हमें जीव–जंतुओं की आवश्यकता अनुसार सहायता एवं रक्षा जरूर करनी चाहिए।

हमने सीखा

- हमारे घर में, घर के सदस्यों के अलावा अन्य जीव–जंतु भी रहते हैं।
- इनमें से कुछ पालतू होते हैं, जैसे– गाय, बकरी, भैंस, घोड़ा आदि। ये हमारी जरूरतों को पूरा करते हैं।
- कुछ जीव–जंतु हमें नुकसान भी पहुँचाते हैं, जैसे– कॉकरोच, छिपकली, चूहा आदि।

शिक्षक निर्देश :– बच्चों को स्थानीय क्षेत्र में पाए जाने वाले जीव–जंतुओं एवं उनके आवास के बारे में विस्तार से जानकारी दें।

जीव–जंतुओं का भी होता है अपना घर,
वो भी रहते हैं अपने घर में निर्भय निडर।

www.rajteachers.com

पाठ 16 आओ, नक्शा बनाएँ

एक बार अनिल अपने चाचा जी के साथ बाजार घूमने निकला। चाचा जी ने बताया–सड़क पर बायीं ओर चलना चाहिए। अनिल ने कहा– चाचा जी, दायाँ, बायाँ क्या होता है?

आइए, आज हम दाएँ–बाएँ को समझें।

आपकी कक्षा के अधिकतर साथी जिस हाथ से लिखते व खाना खाते हैं वह उनका दायाँ (दाहिना) हाथ होता है। इसे सीधा हाथ या जीमणा हाथ भी कहते हैं। इसी प्रकार दूसरा हाथ बायाँ हाथ होता है। इसे उल्टा हाथ या डावाँ हाथ भी कहते हैं। अधिकतर लोग अपने समस्त कार्य दाएँ हाथ से करते हैं एवं कुछ लोग बाएँ हाथ से भी लिखते एवं कार्य करते हैं।

देखिए और बताइए

- आपकी कक्षा में कितने साथी दाएँ हाथ से व कितने साथी बाएँ हाथ से लिखते हैं?
- आपके विद्यालय के मध्यांतर भोजन कितने साथी दाएँ हाथ से व कितने साथी बाएँ हाथ से खाना खाते हैं?

दाएँ व बाएँ हाथ की पहचान

- अपनी कॉपी में खाली पन्ने पर बाएँ हाथ की हथेली को रखकर चारों ओर पेंसिल घुमाकर हथेली का चित्र बनाइए। इसी प्रकार दाएँ हाथ

www.rajteachers.com

की हथेली का भी चित्र बनाइए।

बायां हाथ

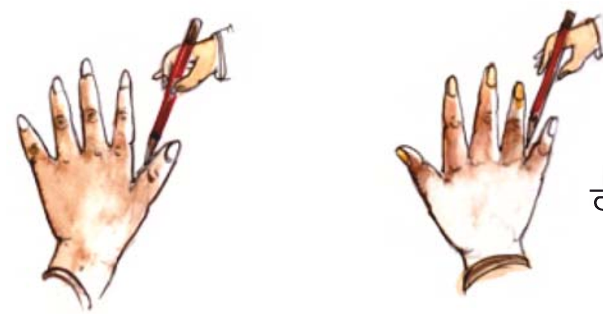

दायां हाथ

चित्र 16.1 हाथ की छाप बनाते हुए

अब कक्षा के दूसरे साथियों की हथेली को हथेली की इन छापों पर इस प्रकार रखो कि अंगूठा अंगूठे पर व अंगुलियाँ अंगुलियों पर रहे। इस प्रकार अपने साथियों के दाएँ व बाएँ हाथ की पहचान कीजिए।

यहाँ एक विद्यालय का चित्र दिया गया है। यदि आप इस विद्यालय

चित्र 16.2 विद्यालय

www.rajteachers.com

में प्रवेश कर रहे हैं तो बताइए

- आपके बायीं ओर क्या है?

  ____

- आपकी दायीं ओर क्या–क्या हैं?

  ____

- विद्यालय के पीछे की ओर क्या–क्या हैं?

  ____

  ____

नीचे श्यामा के घर के आस–पास का दृश्य है। इसे ध्यान से देखिए

चित्र 16.3 श्यामा के घर के आस–पास का दृश्य

www.rajteachers.com

चित्र 16.4 नज़री नक्शे के संकेत (संकेत अमानकीकृत हैं)

संकेतों द्वारा किसी स्थान का रेखा चित्र बनाना नजरी नक्शा कहा जाता है। यदि हमें श्यामा के घर के आस–पास का नजरी–नक्शा बनाना हो तो सभी स्थानों को संकेत से बनाना आसान होगा। ऊपर कुछ स्थानों के लिए संकेत दिए गए हैं। उनका उपयोग कर नजरी–नक्शे को पूरा कीजिए

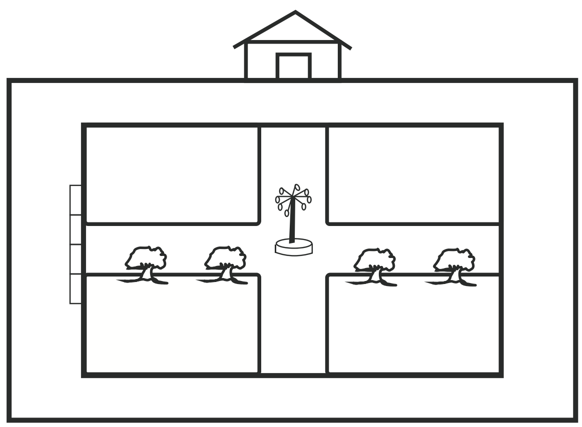

चित्र 16.5 नज़री नक्शा

दिशाएं होती चार

नज़री नक्शा बनाते समय दाएँ–बाएँ,आगे–पीछे के अतिरिक्त दिशाओं का भी ज्ञान होना आवश्यक है। दिशाएँ चार होती है (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण)। सूरज (सूर्य) पूर्व दिशा में उदय होता है तथा पश्चिम दिशा में अस्त होता है। यदि हम उगते सूरज की ओर मुँह करके खड़े हो जाए तो हमारी पीठ के पीछे पश्चिम दिशा, बाएँ हाथ की तरफ उत्तर दिशा तथा दाएँ हाथ

www.rajteachers.com

की तरफ दक्षिण दिशा होती है। दिशाओं की विस्तृत जानकारी हम अगली कक्षा में प्राप्त करेगें।

सोचिए और लिखिए

- दिशाएँ कितनी होती है? नाम लिखिए।

  ____

- सूर्य कौनसी दिशा मे उदय तथा कौनसी दिशा में अस्त होता है?

  ____

- आपके घर का मुख्य द्‌वार किस दिशा में है?

  ____

- आपके विद्‌यालय का प्रवेश द्‌वार किस दिशा में है?

  ____

हमने सीखा

- दाएँ–बाएँ और आगे–पीछे को समझा।
- संकेतों के आधार पर नज़री–नक्शा बनाया जा सकता है।
- दिशाएँ चार होती है पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

संकेतों का रखो ध्यान
नक्शा बनाना हुआ आसान

www.rajteachers.com

पाठ 17

रूप बदलती मिट्टी

शीला ने अपने गुरुजी को बताया कि बरसात के दिनों में हम कच्ची गीली मिट्टी से थप–थप कर घर–घर बनाना खेलते हैं। मिट्टी से खिलौने भी बनाते हैं, पर वे टूट जाते हैं। गुरुजी ने बताया कि अपने यहाँ रामू काका मिट्टी के बर्तन व खिलौने बनाते हैं। कल हम सब रामू काका के घर चलेंगे और मिट्टी से बर्तन व खिलौने बनाने की कला को विस्तार से समझेंगे। सब बच्चे बहुत खुश हो जाते हैं।

चित्र 17.1 मिट्टी से खेलते बच्चे

गुरुजी के साथ सभी बच्चे रामू काका के घर पहुँचते हैं। सभी बच्चे रामू काका को नमस्ते करते हैं। गुरुजी रामू काका से मिट्टी के बर्तन बनाने के बारे में पूछते हैं। रामू काका ने खुश होकर सब बच्चों को अपने चाक के पास ही बैठा लिया और मिट्टी से बर्तन बनाने की पूरी विधि बतलाने लगे।

चित्र 17.2 मिट्टी छानते हुए रामू काका

रामू काका – सुनो बेटा, हम बर्तन या खिलौने बनाने के लिए चिकनी मिट्टी लाते हैं। उसे छानकर कचरा आदि साफ

www.rajteachers.com

कर उसे गूँथते हैं। दूसरे दिन उसे अच्छी तरह गूँथकर बर्तन बनाने लायक तैयार कर लेते हैं।

चित्र 17.3 मिट्टी गूँथते हुए राम काका

कमला – काका, अब मिट्टी तो तैयार हो गई। ये गोल–गोल पहिया क्या काम आता है ?

रामू काका – हाँ बेटी, मैंने इसीलिए आपको इसके पास बैठाया है। ये गोल– गोल पहिया चाक कहलाता है। इस पर तैयार मिट्टी को रखकर चाक को घुमाते हैं। फिर अपने हाथों से मिट्टी को मनचाहा आकार देते हैं।

नेहा – काका, क्या यह बर्तन तैयार हो गया है?

चित्र 17.4 चाक पर बर्तन बनाते हुए रामू काका

रामू काका – बेटी अब इन बर्तनों को सुखाते हैं। फिर मजबूती के लिए इन्हें भट्टी में पकाते हैं। आकर्षक रंगो से सजाकर इन्हें बेचने के लिए तैयार करते हैं।

www.rajteachers.com

सोचिए और बताइए

- मिट्टी के मटके में रखा पानी ठंडा क्यों होता है ?
- मिट्टी के मटके को नीचे से हाथ लगाने पर गीला क्यों लगता है?

निशा — काका, क्या खिलौनों को भी पकाया जाता है?

रामू काका — बेटी, ज्यादातर खिलौनों को कई दिन तक सुखाकर उन पर रंग कर देते हैं। कई तरह के खिलौनों को पकाया भी जाता है।

गुरुजी रामू काका को धन्यवाद देते हैं और सभी विद्यालय आ जाते हैं।

सोचिए और लिखिए

- आपके घर में कौन –कौनसे मिट्टी के बर्तन काम में लेते हैं?

  ____

  ____

- चाक और भट्टी का उपयोग किए बिना बर्तन बनाये जा सकते हैं?

  ____

- निशा ने घर जाकर मिट्टी के कुछ बर्तन बनाए और धूप में सुखा दिए। आपको क्या लगता है, ये बर्तन मजबूत होंगे ?

  ____

पता कीजिए और लिखिए

आपने मिट्टी के बने हुए कौन–कौनसे बर्तन देखे हैं? वे क्या–क्या काम आते हैं ? तालिका में लिखिए।

www.rajteachers.com

मिट्टी के बर्तन	उपयोग

रामू काका मिट्टी के बर्तन बनाते हैं, जिसे बेचकर वे अपने घर का खर्चा चलाते हैं। आपके पड़ोस में रहने वाले लोग भी कुछ काम धंधे करते होंगे। नीचे काम–धंधों के चित्रों को ध्यान से देखिए।

चित्र 17.5 विभिन्न काम–धंधे

देखिए और लिखिए

- चित्र में कौन–कौन से काम धंधे दिखाई दे रहे हैं?

____

____

____

www.rajteachers.com

● आपने अपने आस–पास इनमें से कौन–कौन से काम धंधे होते हुए देखे हैं?

____

____

● आपने जिन काम धंधों को होते हुए देखा है, उनके नाम व उन काम धंधों में काम आने वाली चीजों के नाम तालिका में लिखिए।

क्रम सं.	काम धंधे	काम आने वाली चीजें
1.	पंचर बनाने की दुकान	पंप, पंचर वाली ट्यूब, पानी, पाना, ट्यूब
2.		
3.		
4.		
5.		

यह भी कीजिए

● कक्षा के सभी बच्चे मिलकर मिट्टी के बर्तन/खिलौने बनाइए और

www.rajteachers.com

उन्हें अपनी इच्छानुसार सजाइए।

- नीचे गमले व मटके का चित्र दिया गया है, उसमें रंग भरिए।

पता कीजिए व लिखिए

अपने आस–पास किसी एक व्यवसायी, जैसे दर्जी, सुथार, लुहार से मिलकर उनके बारे में जानकारियाँ लें, जैसे– वे क्या बनाते हैं, उनको कौन–कौन सहयोग देता है,बनी हुई सामग्री को कहाँ बेचते हैं, और उन्हें किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

हमने सीखा

- सभी व्यक्तियों के अपने अलग–अलग कार्य होते हैं, जिनके द्‌वारा वे समाज को अपनी सेवाएँ देते हैं।
- मिट्‌टी के बर्तनों में पानी ठंडा रहता है।
- मिट्‌टी के बर्तन चिकनी मिट्‌टी गूँथकर चाक पर बनाए जाते हैं।

देश की माटी, देश का जल
हवा देश की, देश के फल
सरस बने प्रभु सरस बने।

www.rajteachers.com

पाठ 18 अलग–अलग हैं सबके काम

अनीता के पिता जी दूध बेचने का काम करते हैं। उनके घर में बहुत सारी गायें और भैंसें हैं। अनीता की माँ व पिता जी रोज सुबह जल्दी उठकर पशुओं को चारा–पानी देते हैं। इनकी सेवा के बाद वे दूध निकालते हैं। उसके पिता जी मोटर–साइकिल पर टंकी लगा कर दूध बेचने पास के शहर जाते हैं। अनीता और उसका भाई महेश भी घर के कामों में अपने माता–पिता की सहायता करते हैं। उसके बाद दोनों तैयार होकर विद्यालय जाते हैं।

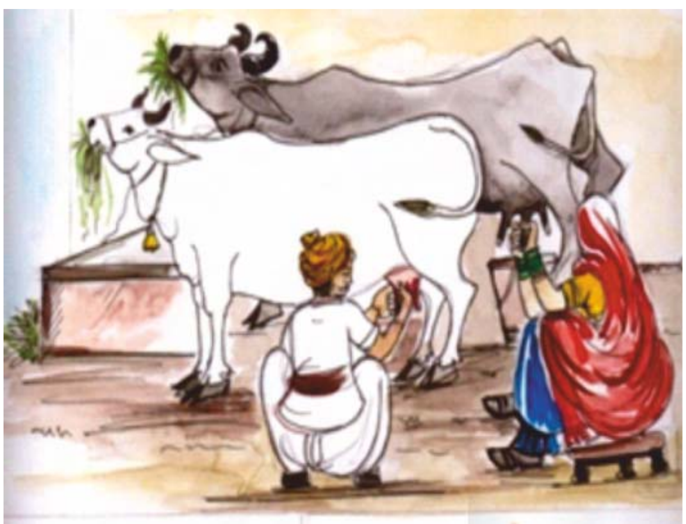

चित्र 18.1 दूध निकालना

चित्र 18.2 दूध बेचने जाना

अनीता की सहेली नीलम के माँ–पिता दोनों नौकरी करते हैं। दोनों सुबह उठकर आपस में मिल–जुल कर घर का काम करते हैं। उसके पिताजी ऑफिस जाते समय नीलम को विद्यालय छोड़ जाते हैं। शाम को

www.rajteachers.com

ऑफिस से आते समय घर की आवश्यक वस्तुएँ लेकर आते हैं। नीलम की माँ काम से आते समय दूध लेकर आती है। उसके माँ–पिता जी मिल–जुलकर खाना बनाते हैं और सभी एक साथ बैठकर खाना खाते हैं। नीलम को विद्यालय के गृहकार्य करने में दोनों सहायता करते हैं।

सोचिए और बताइए

- आप सुबह व शाम को घर पर क्या–क्या काम करते हो?
- घर के किन–किन कामों में आप अपनी माँ व पिताजी की सहायता करते हैं ?
- किन–किन कामों में आपके घर के सदस्य आपकी सहायता करते हैं ?
- अनीता के पिता जी दूध बेचने का काम करते हैं। नीलम के पिताजी नौकरी करते हैं। इसी तरह आपके माँ–पिता जी क्या–क्या काम करते हैं ?
- अपने आस–पास के लोगों के बारे में जानकारी इकट्ठी कीजिए। वे क्या–क्या काम करते हैं ?

व्यक्ति अपनी रुचि एवं कौशल के आधार पर भिन्न–भिन्न कार्य करते हैं और अपना जीवनयापन करते हैं जैसे– दर्जी, मोची, डॉक्टर, अध्यापक आदि। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। इन्हें देखकर पहचानिए उसमें क्या–क्या काम हो रहे है।

www.rajteachers.com

चित्र 18.3 विभिन्न प्रकार के कार्य

कुछ विशेष काम करने वालों को विशेष नाम से जाना जाता है। जैसे लकड़ी का काम करने वाले को कारपेंटर या सुथार या खाती कहते हैं। आपने भी ऐसे कई काम करने वालों को देखा होगा।

इन काम करने वालों को क्या कहते हैं ? उनके नाम नीचे दी गई तालिका में लिखिए

काम	क्या कहते हैं?
पढ़ाने का काम	अध्यापक / अध्यापिका
चिकित्सा करने वाला	
स्कूटर ठीक करने वाला	
खेती का कार्य करने वाला	

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है, इसमें सभी सदस्य मिलजुल कर घर में खुश रहते हैं।

आप सभी घरों में कुछ न कुछ कार्य करते होंगे। आपके घर में निम्नलिखित कार्य कौन–कौन करते हैं तथा उनमें सहयोग कौन करता है?

www.rajteachers.com

घर के कार्य	कार्य करने वाले सदस्य	सहयोग करने वाले सदस्य
घर की सफाई		
घर में पानी भरना		
खाना बनाना		
कपड़े धोना		
बर्तन साफ करना		
चाय बनाना		
बाजार से सामान लाना		
बीमार होने पर डॉक्टर को दिखाना		

उपर्युक्त तालिका को भरने के बाद देखिए और बताइए कि –

- इनमें से कौनसे काम आप करते हैं ?
- कौनसे काम आपके पिता जी करते हैं ?
- कौनसे काम आपकी माता जी करती हैं ?

www.rajteachers.com

काम और समय

हम अलग–अलग समय में अलग–अलग काम करते हैं। कुछ काम हमें नियत समय पर ही करने चाहिए। जैसे दाँत साफ करने का कार्य सुबह उठते ही और रात्रि में सोने से पहले करना चाहिए। काम करने के साथ–साथ आराम करने का समय रात्रि में निश्चित होता है। बच्चों को सामान्यतः आठ घंटे नींद लेनी चाहिए। सोने से दो घंटे पहले भोजन करना चाहिए, इससे शरीर स्वस्थ रहता है।

दैनिक दिनचर्या के समय को घड़ी के चित्र में अंकित कीजिए

विद्यालय उठने का समय   विद्यालय जाने का समय   विद्यालय से आने का समय

घर में पढाई करने का समय   खेलने जाने का समय   रात को सोने का समय

अनीता के पड़ोस में रहने वाले देव जी सब्जी मंडी में थड़ी लगा कर सब्जी बेचते हैं। उनका पुत्र राकेश पहले विद्यालय पढ़ने जाता था। धीरे–धीरे सब्जी की थड़ी पर काम बढ़ने लगा तो उसके पिता जी ने उसे

www.rajteachers.com

छुड़वा कर अपने साथ थड़ी पर सहायता के लिए बैठा लिया। अब वह रोजाना पिता जी के साथ सब्जी बेचने में सहायता करता है। एक दिन जब राकेश घर पर आया तो उसके मुंह में से बदबू आ रही थी। माँ ने पूछा कि तू बीड़ी पीकर आया है ? तब वह कुछ नहीं बोला, पर माँ सब समझ गई। उसने तय कर लिया कि वह अब उसे थड़ी पर नहीं भेजेगी, कल से उसको वापस विद्यालय भेजेगी।

उसे याद आया कि राकेश के गुरु जी, पिता जी को कहते थे कि शिक्षा का अधिकार कानून लागू हो गया है, इसलिए राकेश को विद्यालय भेजना जरुरी है। उसके साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि जब राकेश की बहन बड़ी हो जाएगी, तो उसे भी विद्यालय जरूर भेजेगी व खूब पढ़ाएगी।

सोचिए और बताइए

- इस तरह का चित्र आपने और कहाँ देखा है ?
- इस चित्र से हमें क्या संदेश मिल रहा है ?
- राकेश जैसे बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए आपको क्या करना चाहिए ?

हमने सीखा

- परिवार में रहने वाले सदस्यों को मिलजुल कर घर के कार्य करने चाहिए।
- परिवार में रहने वाले सदस्यों के कार्य भिन्न– भिन्न होते हैं।
- डॉक्टर, अध्यापक, किसान, दूधवाला, दुकानदार, मजदूर,

www.rajteachers.com

बिजलीवाला, लुहार, सुथार आदि हमें अलग–अलग प्रकार से अपनी सेवाएँ देते हैं।

- कार्य करने के बाद आराम का समय निश्चित होता है।
- बहुत सारे बच्चे घरेलू समस्याओं की वजह से विद्यालय में नहीं जा पाते। हमें ऐसे बच्चों को विद्यालय से जोड़ना चाहिए।
- धूम्रपान से कई बीमारियाँ होती है, इसे निषेध करना चाहिए।

शिक्षक निर्देश :– बच्चों में विभिन्न कार्यों को करने के प्रति जेण्डर संवेदन–शीलता विकसित करें।

मिलजुल कर हम काम करेंगे।
कभी नहीं आराम करेंगे।
जग में अपना नाम करेंगे।
काम करेंगे, नाम करेंगे।।

www.rajteachers.com

पाठ 19 यातायात के साधन

रमेश और सरिता की गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो गईं थी। दोनों बहुत खुश थे क्योंकि उनके पिता जी अगले दिन उन्हें आबू पर्वत घुमाने के लिए ले जाने वाले थे। दोनों दिनभर जाने की तैयारी करते रहे। उन्हें रात को रेलगाड़ी से जाना था।

चित्र 19.1 घुमावदार रास्तों से जाती हुई बस

रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए उनके पिता जी ने ऑटो–रिक्शा मँगवाया। वे ऑटो रिक्शा से बीकानेर जंक्शन पहुँचे। अपने निर्धारित समय पर रेलगाड़ी स्टेशन पर पहुँच गई। वे आरक्षण सूची में अपना नाम और सीट नंबर देखकर, निर्धारित स्थान पर बैठ गए। रेलगाड़ी बीकानेर से रवाना हुई। वे दोनों खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गए। रात बहुत हो चुकी थी। बाहर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। इसलिए वे दोनों अपनी सीटों पर आकर

www.rajteachers.com

सो गए। सुबह हो गई थी। दोनों की नींद खुली तब पाली स्टेशन आ गया था। वे दोनों खिड़की के बाहर देख रहे थे। लंबे समय बाद गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी, तो पिता जी ने बताया कि आबूरोड़ आ गया है। हमें यहाँ उतरना होगा। वे सभी आबूरोड़ स्टेशन पर उतर गए। वहाँ से उन्हें आबू पर्वत जाना था। वे बस स्टेण्ड से आबू पर्वत जाने वाली बस में बैठ गए। तलहटी से आबू पर्वत का रास्ता घुमावदार था। वे तलहटी से पहाड़ी के घुमावदार रास्तों द्वारा आबू पर्वत पहुँच गए।

आबू पर्वत पहुँच कर उनके पिता जी ने वहाँ पर टेक्सी किराये पर ली। फिर वे होटल पहुँच गए, जहाँ उन्हें ठहरना था।

सोचिए और लिखिए

- रमेश और सरिता ने घर से आबू पर्वत के होटल तक पहुँचने में किन–किन यातायात के साधनों का उपयोग किया ?

  ....

  ....

- आपने किन–किन स्थानों की यात्राएँ की हैं?

  ....

  ....

- आपने ये यात्राएँ किसलिए की हैं?

  ....

  ....

www.rajteachers.com

- आप अपने गाँव या शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए किन–किन साधनों का उपयोग करते हैं?

....

....

- आप यातायात के साधनों का उपयोग कब–कब करते हैं ?

....

....

नीचे यातायात के कुछ साधनों के चित्र दिए गए हैं। इनमें रंग भरिए और पहचान कर उनका नाम लिखिए।

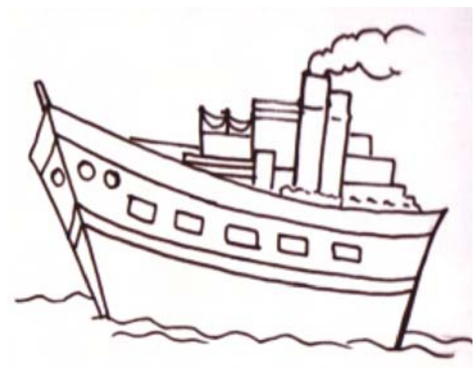

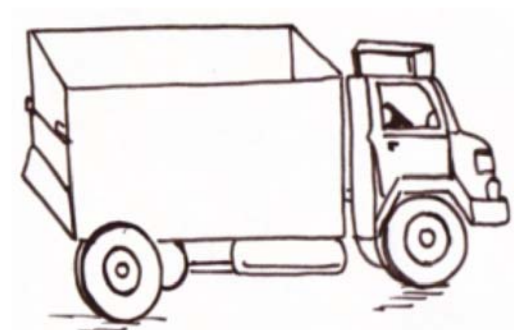

चित्र 19.2 यातायात के साधन

www.rajteachers.com

देखिए और लिखिए

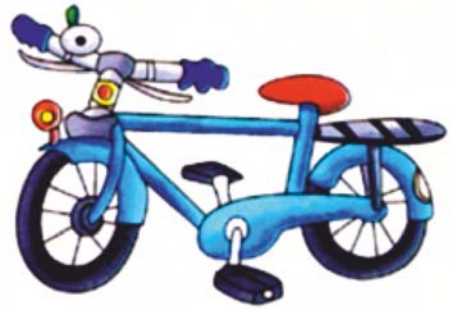

....

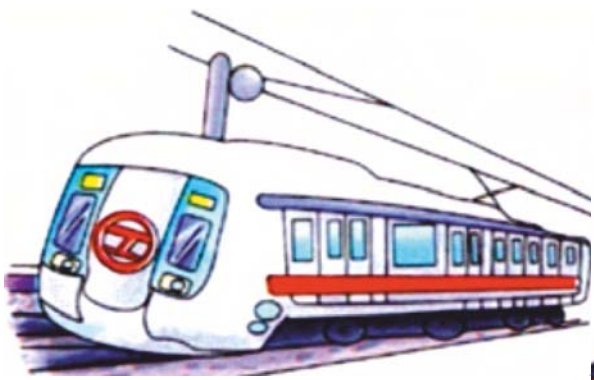

....

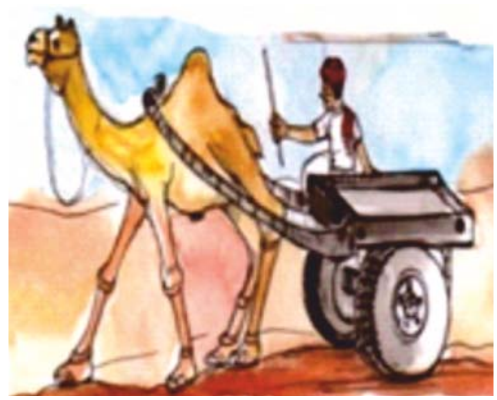

....

चित्र 19.3 यातायात के साधन

www.rajteachers.com

वाहन

- जो सिर्फ सवारी ढोने के काम आते हैं।
- जो सिर्फ माल ढोने के काम आते हैं।
- जो सवारी और माल दोनों को ढोने के काम आते हैं।

यातायात के बदलते साधन

चित्र 19.4 साइकिल का पहिया

चित्र 19.5 कार का पहिया

बहुत समय पहले मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक पैदल चलकर ही जाते थे। जिसमें बहुत अधिक समय लगता था। इसके बाद जानवरों का उपयोग होने लगा। अपने समय को बचाने के लिए मनुष्य ने पहिये की खोज की। आज पहिये के बल पर ही दुनिया चल रही है। आओ, हम भी देखें पहिये से काम कैसे सरल होता है

यह भी कीजिए

अपनी एक किताब को मेज की सतह पर रखकर अंगुली से धक्का लगाइए। अब किताब के नीचे तीन–चार पेन्सिल चित्रानुसार रखकर पुनः किताब को उसी प्रकार धक्का लगाइए।

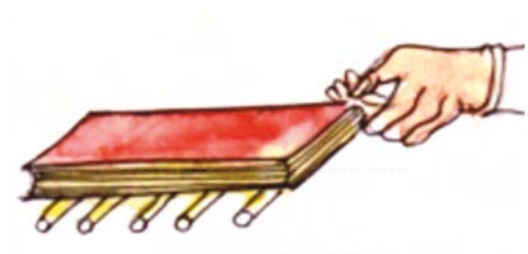

चित्र 19.6 पेंसिल पर किताब सरकाते हुए

www.rajteachers.com

- किस स्थिति में किताब ज्यादा आसानी से खिसकती है?

....

- आपने पहिये को कहाँ–कहाँ देखा है बताइए?

....

- यदि पहिया नहीं होता तो क्या होता?

....

पहिये का आविष्कार होने के बाद यातायात के साधनों में भी बदलाव होता गया। पहले पहिये को खींचने के लिए मनुष्य एवं पशुओं का उपयोग किया जाता था। आज भी सामान ढोने के लिए कहीं–कहीं इनका उपयोग किया जाता है।

अब यातायात के लिए साइकिल, मोटर साइकिल, बस, रेल, हवाई जहाज और पानी के जहाज आदि का उपयोग किया जाता है।

सोचिए और लिखिए

1. निम्न में से कौन से साधन के द्वारा कम समय में अधिक दूरी तय की जा सकती है?

(अ) बस **(ब)** रेलगाड़ी **(स)** बैलगाड़ी **(द)** हवाई जहाज ( )

2. किस साधन में अधिक सवारियाँ बिठाई जा सकती हैं?

(अ) ऑटो **(ब)** जीप **(स)** कार **(द)** बस ( )

www.rajteachers.com

3. निम्नांकित तालिका में वाहनों के पहिये की संख्या बताइए।

क्र.सं.	वाहन	पहियों की संख्या
1.	स्कूटर	
2.	बस	
3.	बैलगाड़ी	
4.	ठेला गाड़ी	
5.	ऑटो रिक्शा	

- क्या आपने कभी लोगों को किसी जानवर की सवारी करते हुए देखा है? यदि हाँ, तो उन जानवरों के नाम लिखिए।

- अखबार व पत्र–पत्रिकाओं से यातायात के साधनों के चित्र काटकर चार्ट पर चिपका कर अपनी कक्षा में लगाइए।

कैसे चले सड़क पर ?

आवागमन के लिए जल, स्थल एवं वायु मार्ग काम में लिए जाते हैं। इनमें से रेल और सड़क यातायात को अधिकांश लोग उपयोग में लेते हैं। हमारे राज्य में अब गाँव–गाँव तक पक्की सड़क पहुँच गयी है। सड़क पर चलते हुए आपने कई संकेतों के बोर्ड सड़क के किनारे लगे हुए देखे होंगे।

www.rajteachers.com

इनमें से कुछ संकेतों के चिह्न नीचे दिए गए हैं। उनको पहचानिए और उनके क्या अर्थ है ? इस पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए

चित्र 19.7 यातायात के संकेत

इन संकेतों का पालन करने के अतिरिक्त हमें सड़क पर चलते हुए सड़क के नियमों का पालन भी करना चाहिए, ताकि दुर्घटना से बचा जा सके।

सड़क सुरक्षा के नियम

- सड़क पर हमेशा बायीं तरफ चलें।
- पैदल चलने के लिए फुटपाथ का उपयोग करें।
- चौराहें पर सड़क पार करते समय ज़ेब्रा लाईन का उपयोग करे।
- सड़क पार करते समय पहले दायें, फिर बायें देख कर तय कर लें कि दोनों ओर से कोई वाहन नहीं आ रहा है। तब सड़क पार करें।

शिक्षक निर्देश – यातायात के संकतों का चार्ट कक्षा में लाकर चर्चा कर उन्हें संकेत के अर्थ बताएँ।

www.rajteachers.com

हमने सीखा

- पहले मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक पैदल जाया करते थे, पहिये के आविष्कार के बाद यातायात के साधनों का निर्माण हुआ। जैसे– बैलगाड़ी, ऊँटगाड़ी, तांगा आदि।
- अब यातायात के लिए साईकिल, मोटर साईकिल, बस, रेल, हवाई जहाज आदि का उपयोग किया जाता है।
- गाँव–गाँव में पक्की सड़क का निर्माण हुआ है।
- सड़क पर कई सकेंतो के बोर्ड लगे होते हैं, जो हमें आगे आने वाली परिस्थिति से अवगत कराते हैं। जैसे–रेलवे क्रॉसिंग, गुफा, बेरियर, चढ़ाई, दाएं, बाएं, मुड़ाव आदि।

सड़क सुरक्षा – जीवन रक्षा

सावधानी हटी,
दुर्घटना घटी

www.rajteachers.com

पाठ 20

संचार के साधन

नीचे दिए गए चित्रों को पहचान कर उनके नाम लिखिए

साधन	नाम
	______________________
	______________________
	______________________
	______________________
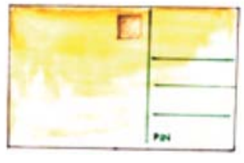	______________________

चित्र 20.1 संचार के साधन

इस प्रकार वे साधन जो सूचना या समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने के काम आते हैं। उन्हें संचार के साधन कहते हैं।

www.rajteachers.com

सोचिए और बताइए

- आपने इनमें से कौन–कौनसे साधनों का उपयोग किया है?
- इनमें से कौनसे साधन के लिए बिजली की आवश्यकता होती है?
- सूचना के साधनों को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत कर तालिका में भरिए।

क्र.सं.	केवल सुनकर सूचना प्राप्त करना प्राप्त करना	केवल देखकर और पढ़कर सूचना प्राप्त करना	देखकर और सुनकर सूचना प्राप्त करना
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

चिट्ठी की यात्रा

भानु मुंडवा (नागौर) का रहने वाला है। उसकी मौसी फलौदी में रहती है।

उसने एक दिन अपनी मौसी को पोस्टकार्ड पर पत्र लिखा। फिर उसने पोस्टकार्ड को पोस्ट ऑफिस के लेटर बॉक्स में डाला।

चित्र 20.2 भानु मौसी को पोस्टकार्ड लिखते हुए

www.rajteachers.com

पोस्टमेन (डाकिया) द्वारा यह चिट्ठी मौसी के यहाँ फलौदी पहुँच गई।

चित्र 20.3 पोस्टमेन लेटर बॉक्स से चिट्ठियाँ निकालते हुए

चित्र 20.4 पोस्टमेन चिट्ठियाँ को ले जाते हुए

यह भी कीजिए

- अपने घर के डाक का पता लिखिए, ताकि आपको लिखा पत्र आप तक पहुँच सके।

  ____

  ____

मानव के विकास के साथ संचार साधनों की यात्रा

पहले ढोल–नगाड़ों के माध्यम से संदेश भेजे जाते थे। कई बार संदेशों को कबूतर के माध्यम से भी भेजा जाने लगा। उस समय हरकारे भी संदेश लाने व ले जाने के काम करते थे। फिर पोस्ट ऑफिस के माध्यम से पत्रों से संदेश भेजे जाने लगे। आज के समय में टेलिफोन, फैक्स, मोबाइल और इंटरनेट जैसे संचार माध्यम के आने से हम संदेश को तुरंत भेजे सकते हैं।

संचार के आधुनिक साधन

टेलीविजन

रविवार का दिन था। रमेश और नीता गृह कार्य कर रहे थे। पिताजी टेलीविजन देख रहे थे। रमेश ने देखा कि पिताजी टेलीविजन पर समाचार देख रहे हैं। टेलीविजन को नजदीक बैठकर नहीं देखना चाहिए।

www.rajteachers.com

सोचिए और लिखिए

- आप टेलीविजन में क्या–क्या देखते हैं?

  ____

  ____

- आपको टेलीविजन से क्या–क्या लाभ होते हैं?

  ____

  ____

टेलीफोन और मोबाइल

विद्यालय में रमेश ने देखा कि प्रधानाध्यापकजी मोबाइल पर बात कर रहे हैं। वे किसी शिक्षक से कह रहे थे कि कल तुम कक्षा में गणित विषय को पढ़ाओगे। मोबाइल से बातचीत के साथ–साथ इन्टरनेट का उपयोग भी करते हैं।

पता कीजिए और बताइए

- आपके आस–पड़ोस में किसी के यहाँ टेलीफोन हो तो उस पर अपने मित्र से बातचीत करके देखिए और उसको कक्षा में बताइए।
- टेलीफोन और मोबाइल किससे चलता है?
- आपके परिवार में कौन–कौन मोबाइल का उपयोग करते हैं?

समाचार पत्र–पत्रिकाएँ – खबर का खजाना

सर्दी का मौसम था। नीता के दादा जी सवेरे धूप में बैठकर अखबार पढ़ रहे थे। नीता ने दादा जी से पूछा, आप अखबार में क्या–क्या पढ़ते हो? दादा जी ने नीता से कहा – देखो, ''मैं अलग–अलग शहरों और गाँवों की घटनाएँ, सूचनाएँ और खबर पढ़ता हूँ।

www.rajteachers.com

पता कीजिए और बताइए

- आपके विद्यालय के वाचनालय में कौन–कौनसे समाचार पत्र आते हैं?
- आपकी कक्षा में कौन–कौनसे साथी अखबार पढ़ते हैं।
- समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकाओं से कौन–कौनसी जानकारियों का पता चलता है?

हमने सीखा

- प्राचीनकाल में संदेशों का संचार हरकारे के माध्यम से होता था। पोस्ट ऑफिस भी संचार का सशक्त माध्यम है।
- टेलीफोन, मोबाइल, इन्टरनेट, रेडियो, टेलीविजन एवं पत्र–पत्रिकाएँ संचार के साधन हैं। ये सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते है।
- आधुनिक संचार साधन मोबाइल का उपयोग प्रतिदिन बढ़ रहा है।
- हमें समाचार पत्र व पत्र–पत्रिकाएँ पढ़नी चाहिए।

शिक्षक निर्देश :– बच्चों को विद्यालय का वाचनालय या घर पर पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित कीजिए। संचार के साधनों का चार्ट कक्षा में लगाकर चर्चा कर बच्चों की समझ बनाई जाए।

संचार सुविधाओं का, ले आधार
संचित कर लो, ज्ञान अपार

www.rajteachers.com